Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अणागयमपस्संता,
पच्चुप्पण्णगवेसगा।
ते पच्छ परितप्पंति, झीणे
आउम्मि जोव्वणे।।

भविष्य में होने वाले दुःख को दृष्टि से ओझल कर वर्तमान सुख को खोजने वाले मनुष्य आयुष्य और यौवन के क्षीण होने पर परिताप करते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 42 • 25 - 31 जुलाई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-07-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

तेरापंथ स्थापना दिवस एवं दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन

हमारे धर्मसंघ ने विकास किया है और विकास करता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

छापर, १३ जुलाई, २०२२

आषाढ़ी पूर्णिमा–तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा। आज के दिन को भारतीय संस्कृति में गुरु पूर्णिमा के रूप में मान्यता प्राप्त है। संसार में सद्गुरु ही कल्याण का मार्ग बताने वाले होते हैं, इस कारण व्यक्ति के जीवन में गुरु का महत्त्व है। सद्गुरु अपने शिष्य को सद्मार्ग रूपी राजमार्ग पर चलना सिखाते हैं।

आज ही के दिन २६२ वर्ष पूर्व मेवाड़ के केलवा नगर में जैन श्वेतांबर तेरापंथ की स्थापना हुई थी। आचार्य भिक्षु आदि पाँच संतों ने केलवा में व शेष आठ संतों ने अन्यत्र आज ही के दिन सायंकाल लगभग ७:३० बजे भाव दीक्षा ग्रहण की थी। वह दिन था सन् १७६०, १६ जून शनिवार, विक्रम संवत् १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा। तेरापंथ वर्तमान में विशाल वटवृक्ष बनकर जैन धर्म की प्रभावना कर रहा है।

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता, वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में ईमानदारी, सच्चाई प्रामाणिकता का बहुत महत्त्व है। सच्चाई की खोज के लिए पुरुषार्थ भी अपेक्षित होता है।

वैज्ञानिक जगत में सच्चाई की खोज की जाती है। आध्यात्मिक जगत में भी सच्चाई की प्राप्ति की जाती है। हमारे पास केवल ज्ञान हो तो सच्चाई कृत्य-कृत्य हो जाती है। सारी सच्चाई सामने आ जाती है। सच्चाई खोजने का प्रयास उन्हीं के लिए उपयोगी हो सकता है, जो अकेवल ज्ञानी है, छद्मस्थ है।

जहाँ मति श्रुत ज्ञान है, वहाँ अपने बौद्धिक बल पर सच्चाई के अन्वेषण का प्रयास किया जा सकता है। सच्चाई को खोजना कोई सामान्य बात नहीं है। सच्चाई के प्रति श्रद्धा हो, समर्पण हो। सच्चाई को पाने के लिए व्यक्ति अपने संप्रदाय से भी संबंध तोड़ लेता है। साधना या कार्य की दृष्टि से संप्रदाय एक सहायक तत्त्व हो सकता है। वह साधन बन सकता है, पर साध्य नहीं है।

सच्चाई को पाने के लिए कुछ बलिदान-कुर्बानी की भी क्षमता हो वह सच्चाई की प्राप्ति और सच्चाईपूर्ण व्यवहार को प्राप्त कर सकता है।

आज आषाढ़ी पूर्णिमा है। शेषकाल का अंतिम दिन है। आज सायंकाल से चारित्रात्माओं को चतुर्मास से आबद्ध भी होना है। आषाढ़ी पूर्णिमा आचार्य भिक्षु का दीक्षा दिवस है। भाव दीक्षा के साथ तेरापंथ की स्थापना होने का दिवस है। हमारे धर्मसंघ के संगठन से जुड़ा हुआ आज का दिन है। तेरापंथ नाम मिला है। नामकरण जोधपुर में हुआ और स्थापना केलवा में हुई। हे! प्रभो यह तेरापंथ। हम तो चलने वाले पथिक हैं।

आचार्य भिक्षु ने पहला चतुर्मास केलवा में किया था। अँधेरी ओरी का स्थान मिला, तो वहाँ उपसर्ग भी हुआ पर आचार्य भिक्षु संकल्प बली थे, उपसर्ग शांत भी हो गए। उसे देवता भी नमस्कार करते हैं, जिसका मन सदा धर्म में बना रहता है। केलवा के लोगों ने धर्म स्वीकार कर लिया।

स्वामीजी ने तपस्या-साधना की थी। क्रांति के पीछे लक्ष्य क्या है? वो महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जहाँ लक्ष्य पवित्र है, वहाँ कठिनाई आए तो आए। क्रांति भी समक्रांति हो। क्रांति करने वाले में त्याग की चेतना होनी चाहिए। अनेक साथी उन्हें मिले, कई चले भी गए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

ज्ञान प्राप्ति का सक्षम माध्यम है 'श्रुत' : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १७ जुलाई, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती के तीसरे सूत्र में कहा गया है कि श्रुत को नमस्कार। प्रथम तीन सूत्रों में मंगल का प्रयोग किया गया है। नमस्कार किया गया है।

जैन दर्शन में ज्ञान के पाँच प्रकार बताए गए हैं। मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यव और केवल ज्ञान। श्रुत ज्ञान के दो प्रकार होते हैं। द्रव्य श्रुत और भाव श्रुत। हम शब्द का उच्चारण करते हैं या लिखा हुआ होता है। ये दोनों द्रव्य श्रुत हैं, जड़ श्रुत है। उस जड़ श्रुत से हमें जो अर्थ बोध होता है, वह बोध भाव श्रुत होता है। शब्द भले जड़ हो, ज्ञान के बड़े सक्षम माध्यम बनते हैं।

मैं प्रवचन कर रहा हूँ, यह शब्दों की दुनिया है। मेरे शब्द को श्रोता सुन रहे हैं। मैं स्वयं भी अपने शब्दों को सुन रहा हूँ। सुनने से हो सकता है कईयों को ज्ञान मिल जाए। शब्द माध्यम बनते हैं ज्ञान के। वृत्तिकार ने यहाँ श्रुत का अर्थ द्वादशांगी या अर्हत् प्रवचन किया है। प्रश्न होता है कि देवता या अर्हत् को तो नमस्कार किया जा सकता है, पर यहाँ श्रुत को नमस्कार कैसे किया गया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 - 31 जुलाई, 2022

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मास काल में आचार्यप्रवर करेंगे भगवती सूत्र आगम और कालूयशोविलास का व्याख्यान

पथ दर्शक और जिज्ञासाओं के समाधायक होते है तीर्थंकर : आचार्यश्री महाश्रमण

छापर, १५ जुलाई, २०२२

जिनवाणी के माध्यम से जन-जन का कल्याण करने वाले तीर्थंकर प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ३२ आगमों में सबसे बड़े आगम 'भगवती सूत्र' के माध्यम से पावन प्रेरणा प्रदान करने का क्रम प्रारंभ किया।

जिनवाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र ३२ आगमों में सबसे बड़ा और विशालकाय आगम है। इसका प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से शुरू होता है। यह इसका पहला सूत्र है। इस नमस्कार की जो रचना है, पाँचवाँ पद दिया गया है—णमो सव्व साहूणं। इसमें लोए शब्द नहीं दिया गया है।

भगवती में णमो सव्व साहूणं की व्याख्या की गई है। ऐसो पंचणमोक्कारो नहीं दिया गया है। नमस्कार के अनेक रूप हो सकते हैं। कहीं पाँच पद नहीं मिलते, दो ही पद मिलते हैं। णमो अरहंताणं, णमो सव्व सिद्धाणं। वर्तमान में हमारे यहाँ पाँच पदों वाला नमस्कार महामंत्र प्रचलित है। उसमें भी णमो लोए सव्व साहूणं पाठ हमारे यहाँ प्रसिद्ध है।

प्रारंभ में दिए गए नमस्कार मंत्र को मंगल माना गया है। कार्य निर्विघ्नता संपन्न हो जाएँ, उसके लिए मंगल का उपयोग किया जाता है। आदि मंगल, मध्य मंगल ओर अंतमंगल की बात भी हो सकती है। आगम तो वैसे अपने आपमें ही मंगल है। परम विशिष्ट आत्माएँ हैं, उनको नमस्कार करें।

हमारी दुनिया में मनुष्यों में तो धर्म के क्षेत्र में सबसे बड़े अर्हत् होते हैं। इसलिए सिद्धों से पहले अर्हतों को नमस्कार किया गया है, क्योंकि ज्ञान के प्रदाता वे हैं। हमारे काम तो अर्हत आते हैं, सिद्ध क्या काम आते हैं? वे तो विराजमान हो गए। वे न तो हमसे बात करते, न हमें सिखाते, न पथदर्शन देते, न हम उनके चरणों में माथा रखकर वंदन कर सकते। उनको तो दूर से नमस्कार भले कर लें और स्वार्थ हमारा उनसे सिद्ध नहीं होता है। अर्हतों से हमारा स्वार्थ सिद्ध हो सकता है।

अर्हत् तीर्थंकर है, प्रवचनकार है, पथ-प्रदर्शक है, जिज्ञासा के समाधायक भी हैं। णमो अरहंताणं में भी पाठांतर की बात है। णमो अरिहंताणं, णमो अरुहंताणं भी पाठ चलता है। हमारे यहाँ चालु व्यवस्था में णमो अरहंताणं ज्यादा काम लिया जाता है।

अर्हत् जो चार घाती कर्मों को क्षीण कर चुके हैं। केवलज्ञान, केवलदर्शन से संपन्न है। तीर्थंकर तीर्थ की स्थापना करने वाले होते हैं। एक समय आता है और अर्हत् भी सिद्धावस्था को प्राप्त हो जाते हैं। शेष चार अघाती कर्मों का भी वो क्षय करके मोक्ष अवस्था को भी प्राप्त हो जाते हैं।

अर्हत् दुनिया में हमेशा रहते हैं। कम से कम बीस तीर्थंकर और अधिकतम एक सौ सत्तर तीर्थंकर एक साथ हमेशा दुनिया में विद्यमान रहते हैं। तो अर्हतों को यहाँ सबसे पहले नमस्कार किया गया है।

दूसरे नंबर पर णमो सिद्धाणं, आठों कर्मों से मुक्त सिद्ध आत्माओं को नमस्कार किया गया है। वे मोक्ष में विराजमान शुद्ध आत्माएँ हैं। शरीर-वाणी-मन नहीं है। अशरीर अवाक् और अमन होते हैं। केवल चैतन्यमय है। एक बार जो आत्माएँ सिद्ध बन गई, वापस संसार में जन्म-मरण लेती नहीं। हमेशा के लिए वे सिद्ध स्वरूप में ही विराजमान रहेगी।

भगवान महावीर पहले अर्हत थे। कितना उन्होंने विचरण किया, धर्म का उपदेश दिया, बाद में कार्तिक कृष्णा अमावस्या को वे मोक्ष को प्राप्त हो गए, सिद्ध बन गए। जहाँ वो आत्मा विराजमान हो गई, दो ईंच भी आगे-पीछे नहीं होगी। २४ ही तीर्थंकर ऋषभ आदि व और भी कितनी आत्माएँ मोक्ष में हैं, वे वापस जन्म नहीं लेंगी।

जैन दर्शन में ऐसा नहीं माना गया है कि कोई परमात्मा-भगवान वापस जन्म लेती है। परंतु देवलोक में जो आत्माएँ हैं, वो नीचे आ सकती हैं। मनुष्य रूप में अवतार ले सकते हैं। महापुरुष के रूप में रह सकते हैं। यदा-कदा दुनिया में महापुरुष पैदा होकर धर्म का विकास करें, अधर्म को मिटाने का प्रयास करें।

सिद्ध बनने वाले हैं, वो कोई साधु के वेष में या गृहस्थ वेष में है, उसकी आत्मा सिद्धावस्था मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। पुरुष, स्त्री या नपुंसक भी जा सकता है।

तीसरे नंबर में णमो आयरियाणं—आचार्यों को नमस्कार किया गया है। आचार्य मध्यस्थ है, उनसे ऊपर दो हैं, उनसे नीचे दो हैं। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि कहे गए हैं। कोई निर्णय करना हो उसके आचार्य अधिकृत होते हैं। हमारे धर्मसंघ में आचार्य का बड़ा महत्त्व है। आचार्य स्वयं आचार पालने वाले, दूसरों को आचार पालन में सहयोग देने वाले होते हैं।

णमो उवज्झायाणं-उपाध्यायों को नमस्कार किया गया है। उपाध्याय ज्ञान के भंडार होते हैं। उपाध्याय एक ही व्यक्ति आचार्य भी हो सकता है तो अलग-अलग व्यक्ति भी हो सकता है। हमारे धर्मसंघ में उपाध्याय पद अलग से किसी के पास नहीं है। आचार्य ही हमारे उपाध्याय हैं। जब आचार्य पठन-पाठन करते हैं, तो उनका उपाध्यायात्व उजागर हो जाता है। आचार्य भिक्षु ने एक बार फरमा दिया था कि सातों पद में ही संभालता हूँ, यही परंपरा चल रही हैं

णमो सव्वसाहूणं—सब साधुओं को नमस्कार है। शुद्ध साधु जो भी जहाँ है, उन सब साधुओं को नमस्कार है। इसका पाठांतर है—णमो लोए सव्व साहूणं। लोक के समस्त साधुओं को नमस्कार किया गया है। किसी समय पूरे लोक में साधु हो सकते हैं केवली समुद्घात के समय आत्मा के प्रदेश पूरे लोक में फैल जाते हैं, इस उपेक्षा से साधु समस्त लोक में हो सकते हैं। यह मंगल के रूप में पाँच पदों का सूत्र भगवती सूत्र में दिया गया है।

आचार्यप्रवर ने आचार्य कालूगणी की जन्मभूमि पर आचार्य तुलसी द्वारा रचित कालूयशोविलास के रूप में उपरला बखान प्रारंभ किया। आचार्यप्रवर ने पद्यों का संगान कर स्थानीय भाषा में फरमाते हुए कहा कि कालूगणी हमारे कल्पतरु थे। वे कलाओं के निधान थे। वे कोमल करुणाशील व हमारे धर्मसंघ की शान थे।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

ज्ञान प्राप्ति का सक्षम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यहाँ बताया गया है कि श्रुत इष्ट देवता ही है। जिन वाणी और जिन देव में क्या अंतर है? जो श्रुत की भक्ति से आराधना-उपासना करते हैं, वो जिनेश्वर भगवान की आराधना करते हैं। अर्हत् होते हैं, वे सिद्धों को नमस्कार करते हैं।

ज्ञान का महत्त्व होता है। सम्यक् ज्ञान नहीं है, तो सम्यक् चारित्र भी नहीं हो सकता। जयाचार्य ने भगवती सूत्र पर बड़ा ग्रंथ लिखा है, जिसका नाम है, भगवती की जोड़। राजस्थानी भाषा में भगवती की व्याख्या-टिप्पणी लिखी है। उन्होंने वृत्तिकार की भी समीक्षा की है।

भगवती जोड़ में जयाचार्य ने श्रुत की अपनी व्याख्या बताई है। जो चारित्रवान ज्ञान युक्त साधु है, उसको नमस्कार है। श्रुत का बड़ा महत्त्व है। प्राचीन काल में तो सुनते-सुनते आगे से आगे ज्ञान की परंपरा चलती रही होगी। आज भी हमने अनेक बातें अपने गुरुओं से सुनी है। सुनी हुई बात दूसरों को बता दें तो सुना हुआ श्रुत होता है।

ज्ञान अपने आपमें एक बड़ी पवित्र चीज होती है। निर्जरा के बारह भेदों में एक भेद है—स्वाध्याय। श्रुत का संबंध स्वाध्याय के साथ होता है। नीति शुद्ध रहे। शुद्ध नीति से कोई कार्य करते हैं तो उसका दोष भी न लगे। हमारे गुरुओं ने जो बताया है उस रास्ते पर हम चलते हैं।

आचार्यप्रवर ने कालू यशोविलास को व्याख्यायित करते हुए फरमाया कि बुद्धमल जी के पाँच बेटे हुए थे। मूलचंद दूसरे नंबर के पुत्र थे। मुनि कालू का वि०सं० १९३३ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को जन्म हुआ था। कन्या लग्न बृहस्पतिवार को जन्म हुआ था। माता व परिवार वाले बहुत हर्षित होते हैं, कारण छोगांजी के सत्तरह वर्ष बाद संतान उत्पन्न हुई थी। मुनि कालू के जन्म के तीन दिन बाद एक यक्ष द्वारा कठिनाई की स्थिति हो जाती है। पर छोगांजी दृढ़ साहसी थी। छोगांजी ने बच्चे को गोद में लेकर यक्ष को दूर कर दिया। बुद्धसिंह ने अपने पोते के भविष्य के बारे में ज्योतिषी से पूछा। ज्योतिषी ने सारा उनका भविष्य फल बता दिया। बुद्धसिंह ने दूसरे ज्योतिषी से भी पूछा। उसने भी वही अच्छी बातें बताई। भृगु संहिता से भी उनके भविष्य की जानकारी प्राप्त की गई।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि यदि तुम विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें अपनी इंद्रियों का संयम करना होगा। यदि तुम विपत्तियों को प्राप्त करना चाहते हो तो तुम अपनी इंद्रियों का असंयम करो। इंद्रियों पर संयम करने वाला व्यक्ति अपनी आत्मा के भीतर रहता है। भगवान कभी बाहर की दुनिया में उपलब्ध नहीं होते।

साध्वी सुषमा कुमारी जी ने बहनों के नवरंगी तप की प्रेरणा दी।

सिद्धकरण सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। चुरू जिला प्रमुख वंदना ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति ने उनका साहित्य से सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

उत्थान कार्यक्रम का आयोजन

घाटकोपर (मुंबई)।

कपोलवाड़ी घाटकोपर में मुनि प्रो० महेंद्र कुमार जी के सहवर्ती मुनि डॉ० अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी के सान्निध्य में 'मेरे साथ ही क्यों?' विषय पर तेरापंथी सभा, मुंबई के तत्त्वावधान में उत्थान का सेमिनार आयोजित हुआ। जिसमें तेरापंथ समाज घाटकोपर के ७०० श्रावकों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण महिला मंडल, घाटकोपर ने किया। कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला ने संयुक्त रूप से उत्थान थीम सॉन्ग पर अपनी प्रस्तुति दी। तेयुप, घाटकोपर के सदस्यों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल बाफना ने सभी का स्वागत किया।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने अपने प्रवचन में तीन-एस फार्मूला शुभ मन, शुभ वचन, शुभ काया की प्रवृत्ति के बारे में बताया। साथ ही गृहस्थ जीवन व दीक्षा जीवन में बताते हुए दीक्षा की प्रेरणा भी दी। मुनिश्री द्वारा १० मिनट का ध्यान का प्रयोग कराया।

तेयुप अध्यक्ष राजेश सिंघवी ने पूरे कार्यक्रम का श्रेय मुनिश्री की प्रेरणा व युवा साथियों को दिया। कार्यक्रम के संप्रसारक सहयोगी चिराग गणपतलाल डागलिया थे। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री रूपेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप कोषाध्यक्ष धनराज डांगी ने किया।

अहिंसा रैली से हुआ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

जसोल।

अहिंसा रैली के साथ शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। साध्वीश्री जी के मंगल प्रवेश पर तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल की ओर से स्वागत किया गया। रैली बस स्टैंड रोड, अणुव्रत द्वार से रवाना होकर मुख्य मार्गों से होते हुए पुराना ओसवाल भवन पहुँची।

स्वागत कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि संत-ऋषियों की यह भारत भूमि, जहाँ अनेक तपस्वी संतों ने इस धरा का गौरव बढ़ाया। नगर में संतों के आगमन से मनरूपी बसंत खिलता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि विश्वकल्याण की सोच के साथ प्रेम, मैत्री, करुणा व अहिंसा का पथदर्शन संतों के सौभाग्य से ही मिलता है।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने मंगल प्रवेश शब्द की व्याख्या करते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना के लिए आह्वान किया। साध्वी प्रियदर्शना जी एवं साध्वीवृंद ने सामुहिक गीतिका का संगान किया। साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी एवं साध्वी यशस्वीप्रभाजी ने सामुहिक गीतिका का संगान किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज ने दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तरुण गुंदेचा मुंबई, डूंगरचंद सालेचा, गौतमचंद सालेचा, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, शंकरलाल ढेलड़िया, माणकचंद संकलेचा, जितेंद्र सालेचा, ज्ञानशाला प्रभारी पुष्पादेवी बुरड़, कन्या मंडल उप-संयोजिका कुनिका बाघमार सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

तेमम एवं तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा अलग-अलग सामुहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

✦ *ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मास में आत्मा को पावन बनाएँ

लुधियाना।

साध्वी प्रतिभाश्री जी अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ लुधियाना के तुलसी कल्याण केंद्र में चातुर्मास हेतु पधारी। साध्वीश्री जी ने कमल नौलखा के घर से जुलूस के साथ मुख्य बाजार होती हुई भवन में पधारी। स्वागत में पलक पावड़े बिछाए सैकड़ों श्रद्धालुगण ने साध्वीश्री जी की अगवानी की।

लुधियाना तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर स्वागत गान से साध्वीश्री जी को बधाया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अभय कुमार ने लुधियाना सभा की तरफ से स्वागत में अपने विचार रखे। उपासक प्रशिक्षक एस०पी० जैन, ज्ञानशाला प्रभारी विनोद देवी ने भी अपनी भावना रखी। साध्वी विकासप्रभाजी, साध्वी नीतिप्रभाजी ने चातुर्मास की सार्थकता बताते हुए अपने विचार रखे।

साध्वी प्रतिभाश्री जी ने कहा कि आज हम गुरुदेव महाश्रमण जी की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए अपनी मंजिल पर पहुँच गए हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप सरिता में नहाकर मन और आत्मा को पावन बनाना है। अनेकों भाई-बहनों ने भी अपने विचारों से स्वागत किया।

मंच संचालन नवनिर्वाचित मंत्री सुशील पटवा ने किया।

पथ दर्शक और जिज्ञासाओं के समाधायक...

(पृष्ठ २ का शेष)

कालूगणी छोगांजी-मूलचंदजी के पुत्र थे। वे मघवागणी द्वारा दीक्षित उनके शिष्य थे। डालगणी के पट्टधर थे। उनके जीवन की अनेक बातें कालू यशोविलास में गुंफित हैं। इसके कुल छः विभाग हैं। इस ग्रंथ का जितना स्वाद लिया जाए, अच्छा है। जानकारी मिल सकती है। उनके जन्म के समय के छापर का चित्रण सुंदर ढंग से समझाया।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मणी, मंत्र और औषधि का अचिन्त्य प्रभाव होता है। हर पदार्थ से रश्मियाँ निकलती हैं। रत्नों से निकलने वाली रश्मियाँ शुभ भी हो सकती हैं और अशुभ भी हो सकती हैं। उनका अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। औषधि का प्रभाव भी अकल्पनीय होती है। जड़ी-बूटियों का अलग प्रभाव होता है। मंत्र का भी अपना प्रभाव होता है। जिनसे सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

व्यवस्था समिति द्वारा चतुर्मास की फड़द एवं चातुर्मास प्रवास पुस्तिका पूज्यप्रवर को समर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मुनि दिनेश कुमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समझाया कि प्रवचन श्रवण से त्याग-विरक्ति के भाव आ सकते हैं।

हमारे धर्मसंघ ने विकास किया है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संगठन बनना विशेष बात हो सकती है, पर संगठन आगे बढ़ना और विशेष बात होती है। तेरापंथ को शुरू हुए आज २६२ वर्ष पूरे हो रहे हैं। आचार्य भिक्षु ने संगठन को उत्पन्न ही नहीं किया, उसे निष्पन्न करने का भी प्रयास किया। तेरापंथ रूपी संतान को पैदा कर उसका पालन-पोषण का भी प्रयास किया। वे तेरापंथ के जनक थे।

आचार्य भिक्षु की उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली, उन्होंने भी योगदान दिया है। संगठन के प्रत्येक सदस्य का योगदान होता है। तेरापंथ के विकास के योगदान में पूज्य जयाचार्य का विशेष योगदान रहा। आचार्य तुलसी के समय में तेरापंथ ने तीसरी शताब्दी में प्रवेश किया था। आचार्य तुलसी ने धर्मसंघ का भी विकास किया।

साहित्य विकास के क्षेत्र में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का एक विशेष नाम प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान उनके अवदान हैं। हमारे धर्मसंघ ने विकास किया है और विकास करता रहे, यह काम्य है। हमारा संगठन मजबूत रहे, जागरूक रहे। अच्छा काम करते रहें। हम हमारे धर्मसंघ की सुष्मा को बढ़ाने का प्रयास करते रहें।

मुमुक्षु संख्या बढ़े, ऐसा प्रयास वांछनीय है। अतीत में दस आचार्य हो गया है। वर्तमान में भी आचार्यों का, संतों का योगदान मिल रहा है। संघ में सेवाभावी, ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी आदि कई प्रकार के लोग हो तो धर्मसंघ रूपी रथ अच्छे ढंग से आगे बढ़ सकता है। तेरापंथ के तपस्वी संत एवं तपस्वी साध्वियों का भी एक ग्रंथ तैयार हो। योगदान देना जीवन की पूँजी है।

साध्वीप्रमुखाजी, मुख्य मुनिजी, साध्वीवर्याजी कितना सहयोग कर रही हैं। साधु-साध्वियों, समणियों एवं श्रावक-श्राविकाएँ भी अपने-अपने से योगदान दे रहे हैं। अनेक रूपों में सहयोग दिया जा सकता है, यह अपने आपमें कल्याणकारी बात हो सकती है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि आज का दिन एक अविस्मरणीय दिन है। आज के दिन हमें नया पंथ और नया संत मिला था। आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के प्रणेता थे, भाग्यविधाता थे, हमारे आराध्य थे। वे एक विलक्षण आचार्य थे। आचार्य भिक्षु की तीन विशेषताएँ थीं–वे क्रांतिकारी आचार्य थे, तो शीतदर्शी भी थे, वे शासक थे तो साधक भी थे। वे आचार आराधक थे तो महान सुधारक भी थे।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में गुरु का बड़ा महत्त्व होता है। साधक गुरु प्रसाद की ओर निरंतर अभिमुख रहे। सही गुरु की प्राप्ति होना व्यक्ति के जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि होती है।

मुनिवृंद ने समुह गीत की प्रस्तुति दी। संघगान से कार्यक्रम समापन हुआ।

दीक्षा समारोह का आयोजन

संयम दीप प्रज्ज्वलन करते हुए संयमप्रदाता ने मुमुक्षु नेकता के परिवार वालों से मौखिक आज्ञा ली बाद में मुमुक्षु से मौखिक सहमति ली। आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ सामायिक पाठ से दोनों को यावज्जीवन के लिए तीन करण तीन योग से सर्व सावद्य योग का त्याग करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने दोनों नवदीक्षित का केश लूंचन कर एवं रजोहरण प्रदान करवाया। नामकरण संस्कार करते हुए महामनीषी ने समणी अर्हतप्रज्ञा को नया नाम साध्वी मुक्तिप्रभा एवं मुमुक्षु नेकता को साध्वी प्राचीप्रभा प्रदान करवाया। श्रावक-श्राविकाओं को नवदीक्षित साध्वियों को वंदना करने का निर्देश फरमाया। दोनों नवदीक्षित साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए अच्छे विकास एवं अच्छी साधना करने की प्रेरणा दी।

इस प्रसंग पर साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में दीक्षा को बहुत महत्त्व दिया गया है। दीक्षा का अर्थ है–व्रतों को ग्रहण करना, असंयमित जीवन से संयममय जीवन में स्थापित होना, सुख-सुविधाएँ छोड़ साधना के मार्ग में प्रविष्ट होना। जो व्रत में स्थित होते हैं, उसे सत्य उपलब्ध होता है। दीक्षा से व्यक्ति निपुण हो श्रद्धा को प्राप्त करता है। श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। जो दीक्षा को स्वीकार कर लेता है, वह सुख के राजमार्ग पर प्रस्थान कर देता है।

मुमुक्षु दीक्षिता ने मुमुक्षु एकता का एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा ने समणी अर्हत्प्रज्ञा का परिचय दिया। आज्ञा पत्र का वाचन बजरंग जैन ने किया। मुमुक्षु नेकता के माता-पिता ने आज्ञा पत्र पूज्यप्रवर को समर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 - 31 जुलाई, 2022

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म-शिल्पशाला

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार हैदराबाद महिला मंडल के तत्त्वावधान में रूपांतरण थ्रू जैनिज्म, विषय : 'संयम कार्यशाला' तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के रूप में संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया एवं कार्यशाला के लिए शुभकामनाएँ दी। साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में हुई कार्यशाला में साध्वीश्री जी ने कहा कि चातुर्मास शब्द में ही सारे संयम का सार भरा है।

साध्वी रश्मिप्रभाजी ने सुंदर संगान किया। साध्वी कल्पयशाजी ने बताया कि सुख की पुड़िया सब खरीदना चाहते हैं, लेकिन दुख की कोई नहीं। हम असल में आडंबर में जी रहे हैं। धर्म का वास्तविक स्वरूप वही है, जिससे जीवन में रूपांतरण आए। जीवन में संयम का अवतरण होना चाहिए।

संयोजिका ज्योति भूतोड़िया, जतन ओसवाल का सहयोग रहा। अंत में कार्यशाला का समापन साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से हुआ। इस अवसर पर लगभग १२५ श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

रूपांतरण सिलसिला के तहत कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में रूपांतरण शिल्पशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था–प्रतिक्रमण। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि प्रतिक्रमण का अर्थ है चेतना का जागरण। मुनि भव्य कुमार जी ने कहा कि अशुभ योग से शुभ योग में जाने का नाम प्रतिक्रमण है।

कार्यशाला में परामर्शक नारायण देवी छाजेड़, पीपी देवी गरिमामय उपस्थिति अभातेयुप व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, उपाध्यक्ष चंद्राबालड़, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल देवी बाई छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग १२५ बहनें उपस्थित थीं।

एक कदम स्वावलंबन की ओर

चेन्नई।

तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में स्वावलंबन की दिशा में एक बहन को आगे बढ़ाने के लिए आर्थिक सहयोग किया गया। उपस्थित पुलिसकर्मियों ने महिला मंडल के इस कार्य को बहुत सराहा। महिला मंडल के करणीय कार्य के बारे में उपस्थित सभी को अवगत करवाया। गुरुदेव के अहिंसा यात्रा के तीन मिशन थे, उनके बारे में भी उनको जानकारी दी गई।

इस अवसर पर चेन्नई तेममं अध्यक्षा पुष्पा हिरण, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला, चेन्नई, तेममं मंत्री रीमा सिंघवी, संरक्षिका कमला गेलड़ा, कार्यसमिति सदस्या मंजु चिप्पड़, सुमन बोहरा उपस्थित थे। ट्रैफिक इंस्पेक्टर कुमार, अम्बू, गोपी, दिनेश आदि गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में अरविंद चोरड़िया का विशेष सहयोग रहा।

करुणा के महान सागर थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जोधपुर।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस एवं तेयुप, जोधपुर का शपथ ग्रहण समारोह हनुमंत गार्डन में मनाया गया।

साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने महाप्रज्ञ अष्टकम् से मंगलाचरण किया। स्वागत भाषण सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत ने दिया।

जोधपुर तेयुप की टीम ने विजय गीत प्रस्तुत किया। सुरेंद्र गेलड़ा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। महिला मंडल मंत्री रीना ने भाषण के द्वारा प्रस्तुति दी।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि करुणा के महान सागर थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ, जो व्यक्ति एक बार आपकी करुणा को प्राप्त कर लेता वह अपने आपमें धन्यता की अनुभूति करता। अहिंसा यात्रा में सभी वर्ण, जाति, धर्म संप्रदाय के लोगों को अहिंसा का अमृतपान करवाया। आचार्य महाप्रज्ञ जी की ज्ञान रश्मि, ध्यान रश्मि, योग रश्मि, प्रयोग रश्मि को प्रणाम।

महिला मंडल ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी कंचनरेखाजी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को प्रज्ञा का अवतार बताया। साध्वी सुमंगलाजी ने विचार प्रस्तुत करते हुए युवकों को आह्वान किया कि युगधारा को बदलें। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने कहा कि जो व्यक्ति समर्पण करता है वह शिखर तक पहुँच जाता है। साध्वी सुलभयशाजी, साध्वी संबोधयशाजी, साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया। जितेंद्र गोगड़ एवं निर्मल छल्लाणी ने मंगलभावना प्रस्तुत की।

देवेंद्र जैन ने अध्यक्ष मितेश जैन को शपथ ग्रहण करवाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मितेश जैन ने अपना अध्यक्षीय भाषण एवं आचार्य महाप्रज्ञ के भावांजलि प्रस्तुत की तथा अपनी टीम की घोषणा की। अरविंद समदड़िया ने पूरी टीम को शपथ ग्रहण करवाई।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि जोधपुर, तेयुप कर्मठ है, सक्रिय, जागरूक है, प्रबल पुरुषार्थ एवं घनीभूत आस्था के साथ कार्य क्षेत्र में उतरे धर्मसंघ की सेवा में अपना योगदान देते रहें। मितेश जैन अध्यक्ष पूरी टीम के साथ सहनशील, श्रमशील, कर्मशील एवं आत्मकेंद्रित होकर केंद्र से निर्देशित कार्यक्रमों को प्रामाणिकता दें।

सरदारपुरा अध्यक्ष महावीर चौधरी, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा सुधा भंसाली, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र सुराणा आदि वक्ताओं ने तेयुप के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त की। विनोद सुराणा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन तरुण समदड़िया ने किया।

दृढ़ संकल्पी और आत्मबली थे आचार्य तुलसी

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, सूरत के तत्त्वावधान में आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस का आयोजन महावीर ग्रीन सोसाइटी, पाल में हुआ।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक महान युगदृष्टा आचार्य थे। उन्होंने अपने जीवन में केवल तेरापंथ और जैन धर्म के विकास के लिए ही काम नहीं किया, अपितु समग्र मानव जाति को लक्ष्य में रखकर काम किए। वे एक दृढ़ संकल्पी एवं आत्मबली युगपुरुष थे। वे एक वचन सिद्ध महापुरुष थे, उनके अनेक प्रसंग इस वचन सिद्धि के साथ जोड़े जा सकते हैं। मुनि अनंत कुमार जी ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, सूरत की अध्यक्ष राखी बैद ने स्वागत भाषण दिया। अभतेममं की महामंत्री मधु देरासरिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरपत कोचर, अडाजन सभा के मंत्री सुनील गुगलिया, वरिष्ठ उपासक अशोक संघवी एवं अन्य वक्ताओं ने गुरुदेव तुलसी के को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बहनों ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। मुमुक्षु रिजूल जैन ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगल संगान से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने तुलसी अष्टकम् प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन पूनम गुजरानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन जयंती बेन सिंघी ने किया।

उत्थान की गूँज

भांडुप, मुंबई।

भाग्य भरोसे नहीं स्वयं पर भरोसे से भाग्य का होता है निर्माण। यह उद्गार रखे प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी के सहवर्ती मुनि अभिजीत कुमार जी ने 'अपना भाग्य-डिजाइन योर डेस्टिनी' विषय पर आयोजित उत्थान सेमिनार में जिसमें ५०० से अधिक श्रावकों ने ऊर्जा एवं उत्साह से भाग लिया।

डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी ने पॉजिटिविटी पर फोकस करने की कला एक्टिविटी के माध्यम से सिखाई। उन्होंने 5-A का गोल्डन फार्मूला बताया–अर्हता, एटीट्यूड, अप्रिशिएट, एक्सेप्ट और एफर्मेशन से हम अपने भाग्य का निर्माण एवं अपनी अर्हता का विकास कर सकते हैं।

भांडुप महिला मंडल ने उत्थान गीत पर मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेयुप अध्यक्ष प्रशांत लोढ़ा ने स्वागत वक्तव्य एवं तेरापंथ सभा, मुंबई के सहमंत्री देवेंद्र कोठारी ने सभी को उत्थान से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन सुशील कोठारी ने किया।

अंत्याक्षरी व भक्ति संध्या का आयोजन

सरदारपुरा।

महान दार्शनिक, महान साहित्यकार, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के संवाहक आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस का आयोजन तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। अभिवंदना कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यक्रम में तेयुप द्वारा रतननगर में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में विविध रूपों में अंत्याक्षरी व शास्त्रीनगर में साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, मंत्री निर्मल छलाणी, भजन मंडली से जितेंद्र गोगड़, सुनील बैद, राहुल छाजेड़, विकास चोपड़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

विजापुर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में 'दंपति कार्यशाला' का आयोजन किया गया। जिसमें जैन-अजैन मिलकर कुल २७ दंपति और अन्य अनेक लोगों ने भाग लिया।

साध्वी सोमयशाजी, साध्वी सरलयशाजी, साध्वी ऋषिप्रभाजी आदि द्वारा सफल और सुखी दांपत्य जीवन के रहस्यमय सूत्रों को उद्घाटित किया गया। साध्वीश्री जी ने रोचक तरीकों से मार्गदर्शन प्रदान किया। तेरापंथ सभा के सभी कार्यकर्ताओं द्वारा कार्यक्रम की सफलता के प्रयास किए गए।

✦ *अज्ञान ऐसा अभिशाप है जो क्रोध, लोभ आदि से भी ज्यादा खतरनाक है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ के १०३वें जन्म दिवस समारोह के आयोजन

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जीवन एक महासागर के समान था

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी एवं साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्मदिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में मनाया गया। तेरापंथ जैन समाज के सुश्रावक विक्रम मेहता की सुपुत्री मुमुक्षु नेकता का सम्मान समारोह भी आयोजित हुआ। इससे पूर्व मुमुक्षु नेकता की शोभायात्रा माहेश्वरी भवन से शुरू होकर तेरापंथ भवन पहुँची।

इस अवसर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एक मानव नहीं महामानव थे। उनका जीवन एक महासागर के समान था। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी असीम ज्ञानराशि के धारक थे। वे प्रखर वक्ता, कुशल लेखक, आशु कवि एवं साहित्यकार थे।

उन्होंने कहा कि मुमुक्षु नेकता वाव पथक की पुत्री है। और वाव पथक छोटा सा क्षेत्र होते हुए भी अपने समर्पण के लिए सुविख्यात है। मुमुक्षु नेकता का जो सम्मान हुआ है वह एक व्यक्ति का नहीं बल्कि संयम, त्याग और प्रत्याख्यान का सम्मान है।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जैसे महापुरुष युगों-युगों के बाद अवतरित होते हैं। उन्होंने आगमों के पुनरुद्धार करने का महान कार्य किया। जगत को प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण जैसे विशिष्ट उपक्रम दिए। मुमुक्षु नेकता का जीवन ऊर्ध्वगामी बने और गुरु चरणों में रहते हुए वह अपने अंतिम लक्ष्य मुक्ति की मंजिल को प्राप्त करे, यही शुभकामना प्रेषित करते हैं।

मुनि अनंत कुमार जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का गुणानुवाद करते हुए दीक्षार्थी नेकता को शुभेच्छाएँ प्रेषित की। मुमुक्षु नेकता ने तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने की बात को अपने जीवन का अहोभाग्य बताया और अपने भीतर वैराग्य भाव अंकुरित करने के लिए पूज्य गुरुदेव एवं 'शासनमाता' साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक चंपक मेहता, महासभा प्रधान न्यासी संजय सुराणा, तेरापंथी सभा, सूरत के मैनेजिंग ट्रस्टी बाबूलाल भोगर, सूरत सभा के अध्यक्ष नरपत कोचर, युवक रत्न अशोक संघवी, अंकेश दोशी, सुरेश मेहता एवं मुमुक्षु के परिवारजनों द्वारा मुमुक्षु बहन को अभिनंदन पत्र प्रेषित करते हुए प्रासंगिक मंगलभावनाएँ व्यक्त की गई। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री अनुराग कोठारी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जन्मोत्सव समारोह

सांताक्रुज।

साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी मलयप्रभाजी, साध्वी विपुलयशा जी, साध्वी तेजस्वीप्रभाजी के सान्निध्य में प्रज्ञा पुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्मोत्सव प्रज्ञा दिवस मनाया गया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनीष बाफना द्वारा स्वागत किया गया।

साध्वी मलयप्रभाजी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अनेक घटनाओं को उजागर किया और कविता की प्रस्तुति दी। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ विश्व की दिव्य आध्यात्मिक विभूति थे। आचार्य महाप्रज्ञ एक महान विचारक, चिंतक, दार्शनिक, वैज्ञानिक अनुसंधान प्रभावशाली आचार्य थे।

ज्ञानशाला के बच्चों की प्रस्तुति, कन्या मंडल द्वारा संगीत, भजन मंडली और सुमधुर गायिका रेणु कोठारी ने सुंदर स्वर लहरियों से समा बांधा।

अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी, मुंबई सभा के मंत्री दीपक डागलिया, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री मनीष कोठारी, बाबूलाल बाफना, रतन सियाल की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा अध्यक्ष राजेंद्र नौलखा, मंत्री महेश कोठारी, महिला मंडल संयोजिका ममता कोठारी, संयोजिका डिंपल परमार, माया बाफना, निवर्तमान अध्यक्ष किरण परमार, महेश परमार, ओमप्रकाश चोरड़िया, जयेश चोरड़िया, अर्चित भलावत, गगन गेलड़ा, प्रथम सोलंकी का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री नीलेश कोठारी ने किया। मंच का संचालन साध्वी विपुलयशा जी ने किया।

ज्ञान के महासागर थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

विशाखापट्टनम्

कोठारी भवन में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस का कार्यक्रम मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ज्ञान के महासागर थे। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने साहित्य की जो सुरसरिता प्रवाहित की वह विलक्षण है। तेरापंथ के साहित्य जगत में उनका अद्वितीय स्थान है।

बालमुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने मानसिक एकाग्रता और योग साधना के आधार पर ज्ञान के सागर का अवगाहन किया ओर उसका मंथन कर अनुपम अमृत राशि प्राप्त की।

कार्यक्रम में महिला मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर नाटिका प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा अध्यक्ष चंपालाल डूंगरवाल, तेमम की मंत्री जयश्री ललवानी, अभातेयुप की ओर से ऋषभ सुराणा, मीतू कोठारी, संदीप सेठिया, नरेन आंचलिया आदि ने विचार रखे। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण और गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष विनोद बैद ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

दिल्ली प्रवासी, सुजानगढ़ निवासी पुखराज बाफना की सुपौत्री व गगन-दिशा बाफना की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा व मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप की तरफ से आभार ज्ञापन किया गया व बाफना परिवार को मंगल भावना यंत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

विजयनगर।

आर्सीद निवासी, बैंगलोर प्रवासी नवरतनमल जैन के सुपुत्र अंकुश एवं पुत्रवधू प्रीति जैन की सुपुत्री का नामकरण कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से करवाया।

अभिषेक कावड़िया, श्रेयांस गोलछा एवं विकास बांठिया ने संस्कारक की भूमिका निभाई। परिषद द्वारा बड़ौला परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। आभार ज्ञापन जैन संस्कारक विकास बांठिया ने किया।

नूतन गृह प्रवेश

चेन्नई।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, चेन्नई प्रवासी कनकदेवी जतनलाल पुगलिया के सुपुत्र बिकास-ज्योति पुगलिया का नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपादित हुआ।

अभातेयुप जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा, पुखराज पारख, संतोष सेठिया ने संपूर्ण मंत्रोच्चार के साथ गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

नागौर निवासी, नवसारी प्रवासी स्व० अरुण कुमार जैन के सुपुत्र तेजश जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सागर निवासी रामगोपाल सोनी की सुपुत्री रेशु के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ व मनीष कुमार मालू ने मंगल मंत्रोच्चार संपन्न करवाया।

सरला व रामगोपाल व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया ने दोनों परिवारों का आभार ज्ञापन किया और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

टॉलीगंज।

बजरंग लाल-शांति देवी बांठिया का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक रवि छाजेड़ एवं प्रवीण कुमार सिंघी ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

टॉलीगंज परिषद मंत्री अनुज बागरेचा ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

सायरा निवासी, सूरत प्रवासी बाबूलाल कावड़िया के सुपुत्र नरेश कावड़िया के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, सुशील गुलगुलिया व अरविंद बाफना ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

बाबूलाल ने संस्कारकों का अभिनंदन करते हुए आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 - 31 जुलाई, 2022

✦ *दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व यह संकल्प करो कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊँगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान धर्मसंघ है। एक गुरु के अनुशासन में निरंतर गतिशील है। गुरुदेव की महती कृपा कर रोहिणी क्षेत्र में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी का चातुर्मास फरमाकर हमको उपकृत किया है।

दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना ने कहा कि यह दिल्लीवासियों के लिए सौभाग्य का विषय है कि उन्हें साध्वी कुंदनरेखा जी का चातुर्मास प्राप्त हुआ। साध्वीश्री ऊर्जावान हैं, निश्चित रूपेण इस चौमासे में धर्म प्रभावना अधिक होगी, हमारा विश्वास है।

महासभा के प्रभारी के०के० जैन ने सर्वप्रथम श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया और चातुर्मास सफलता की मंगलकामना की। तेमम, दिल्ली अध्यक्षा मंजु जैन ने कहा कि जिस क्षेत्र में अध्यात्म की गंगा प्रवाहमान होती है, वह क्षेत्र अध्यात्म में निष्णात बन आत्मा के समीप रह सकता है। पश्चिम विहार के अध्यक्ष सुशील जैन, पालम सभा के अध्यक्ष ईश्वर जैन, रोहिणी सभा के पूर्व अध्यक्ष गिरीश जैन, निवर्तमान अध्यक्ष मदनलाल जैन, दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष संजय चोरड़िया, तेयुप के अध्यक्ष विकास सुराणा आदि सभी ने चातुर्मासिक प्रवेश पर शुभकामनाएँ प्रकट कीं एवं गुरुदेव के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर महिला मंडल, तेयुप राजू राखेचा एवं विमल सुराणा ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन रोहिणी सभा के कोषाध्यक्ष पराग जैन ने किया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ गौरवशाली धर्मसंघ है। आज हमें अतिरिक्त प्रसन्नता हो रही है कि गुरुदेव के इंगित अनुसार साध्वीश्री जी चातुर्मास हेतु भवन में पधार गई हैं। धर्माराधना प्रवर्धमान रहे, ऐसी मंगलकामना की।

जाटावास

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी का जैन धर्म के जयघोष के साथ जाटावास स्थित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ।

इससे पहले रातानाडा स्थित कुचेरिया भवन से गणवेश, जैन दुपट्टा पहने युवक, पुरुष व महिला जयघोष लगाते हुए चल रहे थे। महिला मंडल एवं तेयुप की ओर से उद्घोष, नारे व भजनों की प्रस्तुति दी गई। रैली में तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के सदस्य शामिल हुए।

रैली रातानाडा से नई सड़क, सोजती गेट, मोती चौक होते हुए तेरापंथ भवन पहुँची। जहाँ रैली सभा में परिवर्तित हुई। स्वागत के अवसर पर सभा सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पूर्व मंत्री महेंद्र सुराणा ने किया। सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत, तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन, महिला मंडल कार्यकारी अध्यक्ष मंजु सुराणा, मंत्री रीना जैन, ट्रस्टी सभा धनपतराज मेहता, महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली, घीसुलाल अब्बानी, सुरेंद्र समदड़िया आदि ने वक्तव्य, भाषण, कविता से स्वागत किया। तेयुप व महिला मंडल द्वारा सामुहिक गीतिका की प्रस्तुति हुई।

साध्वी कुंथुश्री जी ने अपने मंगल पाथेय में कहा कि हमारे देश में संतों की अभ्यर्थना होती है, वंदना होती है, क्योंकि संत त्यागी होते हैं, परमार्थी होते हैं। चातुर्मास के अवसर पर अध्यात्म की सुवास फैलाने आए हैं। हमारा सच्चा स्वागत अहिंसा के सुमनों से करें, अणुव्रत के संकल्पों से करें, त्याग-तपस्या की सुरभि फैलाएँ आत्मदर्शन करें, जिससे नई रश्मियाँ प्राप्त होंगी। साध्वी सुमंगलाश्री जी व साध्वी सुलभयशा जी ने कहा कि चातुर्मास में अपने भीतर में रहने का अभ्यास करना चाहिए। आभार सभा मंत्री दिलीप मालू व कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष महेंद्र मेहता ने किया।

कटक, उड़ीसा

मुनि जिनेश कुमार जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश समारोह तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संत भ्रमणशील होते हैं। भ्रमणशीलता ही उनकी पहचान है। वे आठ महीने तक विचरण करते हैं और चार महीना तक एक स्थान पर रहते हैं, जिसे हम चातुर्मास कहते हैं। चातुर्मास साधना सिद्धि का अवसर है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि चातुर्मास में अपने वक्त को धर्म की आराधना व प्रवचन श्रवण में नियोजित करना चाहिए। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत कर चातुर्मास सफल बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधायक मोहम्मद मुक्किम ने कटक शहर में संतों का स्वागत करते हुए कहा कि संतों के प्रवचन से अनेक लोगों में बदलाव लाया जा सकता है।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी ने स्वागत भाषण के साथ डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया द्वारा प्रेषित मंगलकामना को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण व गीत से हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य प्रफुल्ल बेताला, मुकेश सेठिया, तेयुप अध्यक्ष भैरव दुगड़, तेमम अध्यक्षा हीरा बैद, तेरापंथी सभा, भुवनेश्वर के अध्यक्ष बच्छराज बेताला सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने संतों के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। तेमम, तेयुप, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने स्वागत गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का आभार तेरापंथी सभा के मंत्री चैनरूप चोरड़िया व संचालन तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष हनुमान सिंघी ने किया। अतिथियों का पंचरंगी पट्टी के द्वारा तेरापंथी सभा द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में जप अनुष्ठान भी कराया गया। कार्यक्रम में कटक, भुवनेश्वर आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी का संयम संवर्धन रैली के साथ गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। श्रावक, श्राविकाओं के उत्साह से जयकारों एवं जयघोषों से वातावरण गुंजायमान हो गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज मुझे अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि हम पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार कोटा चातुर्मास हेतु तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। श्रावकों के चेहरे पर उत्साह का ज्वार परिलक्षित हो रहा है। यह उत्साह गणभक्ति एवं गुरुभक्ति है।

साध्वी कणिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने गीत के माध्यम से उपस्थित जनमेदिनी के भीतर प्रेरणा का संचार किया।

सभाध्यक्ष संजय बोथरा ने साध्वीवृंद का पूरे समाज की ओर से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री धर्मचंद जैन ने किया।

विशाखापट्टनम्

गुरु आज्ञानुसार मुनि दीप कुमार जी ने अपने सहवर्ती संत बालमुनि काव्य कुमार जी के साथ तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। डाबा गार्डन से कुलदीप धाड़ेवा के मकान से जुलूस के रूप में होती हुई तेरापंथ भवन में रैली सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। जहाँ मुनिश्री का स्वागत समारोह आयोजित हुआ।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि इस समय जैसे आकाश में बादल मँडराते हुए दिखाई देते हैं, तो लोगों के हृदय प्रफुल्लित हो जाते हैं। उसी प्रकार इस समय संतजन आचार्यप्रवर द्वारा निर्धारित क्षेत्र में चातुर्मासिक प्रवेश करते हैं तो श्रावक समाम में नए उल्लास और विश्वास का सृजन होता है। गुरु आज्ञा से हम दोनों संत यहाँ चातुर्मास के लिए आए हैं। गुरुदेव की कृपा से चातुर्मास में खूब त्याग-तपमय वातावरण बने।

मुनिश्री ने आगे कहा कि चातुर्मास का समय धर्म के मुख्य सीजन का होता है। इस समय अधिक से अधिक धर्म का रंग खिलना चाहिए।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास में संतजन गुरु आज्ञा से धर्म की गंगा प्रवाहित करते हैं। जिसमें श्रद्धालुजन डुबकी लगाकर धर्म का सही स्वरूप समझते हैं। विशाखापट्टनम् को मुनि दीप कुमार जी स्वामी का चातुर्मास प्राप्त हुआ है, गुरु कृपा से इसका पूरा-पूरा लाभ उठाएँ।

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। तेमम की बहनों ने एवं तेयुप के युवकों ने अलग-अलग स्वागत गीत का संगान किया। तेमम अध्यक्षा वंदना विनायकिया, तेयुप अध्यक्ष राजेश सुराणा, अभातेयुप सदस्य ऋषी सुराणा, कमल बैद आदि ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर संवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष विनोद बैद ने किया।

तीन दिवसीय ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर

बालोतरा।

सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान द्वारा तीन दिवसीय ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का उद्घाटन किया गया। सर्वप्रथम शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी के द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मंगलाचरण में ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा ज्ञानशाला गीत की प्रस्तुति की गई।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि वृक्ष का मूल है—बीज। बीज को पेड़ बनने का सफर संघर्षों से भरा है, लेकिन वह पेड़ फलवान बनकर लोगों के लिए उपयोगी बनता है। हमारा भविष्य उज्ज्वल और स्वर्णिम हो इसके लिए जरूरी है बच्चों को संस्कार दें।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी ने कहा कि हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना, जिससे हमारे चारित्र पर कोई दाग लगे। उच्च चारित्रवान व संस्कारवान बनने का प्रशिक्षण केंद्र है—ज्ञानशाला।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि हमें स्वर्ग में जाने का और नरक में जाने का चिंतन नहीं करना बल्कि हमें इस धरा को ही स्वर्ग बनाना है, हमें आचार्यश्री तुलसी के सपनों को साकार करना है व अपने जीवन का विकास कर अच्छा बनाना है।

साध्वी ध्यानप्रभाजी ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति से होने वाले दुष्प्रभाव को रोकने का सशक्त माध्यम है—ज्ञानशाला।

सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान के अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि ६ वर्ष से १४ वर्ष तक २४५ बच्चों का रजिस्ट्रेशन हुआ। साध्वीवृंद द्वारा सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी गई। शासनसेवी पुखराज तलेसरा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम में अनेक महानुभाव व संस्थान के पदाधिकारी सदस्यगण उपस्थित थे। बालोतरा, जसोल, तेयुप व महिला मंडल कार्यकर्ता ने कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया। इसके साथ सभी क्षेत्र से २५ प्रशिक्षकों ने अपना सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन शिविर संयोजक गौतम वेदमूथा ने किया।

आध्यात्मिक सेमिनार का आयोजन

हासन (कर्नाटक)।

टीपीएफ, हासन के तत्त्वावधान में 'आध्यात्मिक सेमिनार' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। स्पिरिचुअल सेमिनार का विषय 'अंधकार से अध्यात्म की ओर' रखा गया। मुख्य वक्ता ममता कोठारी ने इस विषय पर रोशनी डालते हुए कहा कि सरस चीज एक दिन नीरस हो जाती है। एकमात्र अध्यात्म ही ऐसा है, जिसका रस प्रारंभ से लेकर अंत तक एक जैसा रहता है।

कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। स्वागत टीपीएफ के अध्यक्ष भरत भंसाली ने किया। टीपीएफ राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा हासन शाखा को मोस्ट एक्टिव ब्रांच साउथ जोन का पुरस्कृत सर्टिफिकेट को भरत भंसाली ने सभा में प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह पुरस्कार आप सब समाज के सहयोग से प्राप्त हुआ और सबका अभिनंदन किया।

सेमिनार में अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। टीपीएफ के मंत्री पूजा कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

रोहिणी, तेरापंथ भवन में निवर्तमान अध्यक्ष मदनलाल जैन ने वर्तमान अध्यक्ष विजय जैन को शपथ ग्रहण करवाई। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु जैन, तेयुप के अध्यक्ष विकास सुराणा, दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, पश्चिम विहार के अध्यक्ष सुशील जैन, पालम अध्यक्ष ईश्वर जैन, उत्तम नगर के अध्यक्ष, नागलोई के अध्यक्ष श्रीपाल जैन आदि ने नव मनोनती अध्यक्ष एवं उनकी टीम को बधाई दी। अंत में सभी का आभार व्यक्त किया गया।

अध्यक्ष विजय जैन ने अपनी टीम की उद्घोषणा की। आभार ज्ञापन सभा के महामंत्री राजेंद्र सिंघी ने किया।

गुरुग्राम

शांतिनाथ जैन मंदिर, गुरुग्राम के प्रांगण में संयुक्त शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन जैन संस्कार विधि द्वारा किया गया। शपथ ग्रहण का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व महावीर प्रभु की स्तुति के संगान के साथ हुआ। जेएसटीएस गुरुग्राम के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विमल सेठिया व तेयुप गुरुग्राम के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश चोपड़ा को निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश जैन ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

संस्कारक सुशील डागा ने मंगलभावना यंत्र की विशेष जानकारी दी। तत्पश्चात संस्कारक मनीष बरमेचा ने जैन संस्कार विधि की जानकारी दी। तेयुप, दिल्ली द्वारा गुरुग्राम सभा व तेयुप गुरुग्राम को मंगलभावना यंत्र भेंट किया। जैन संस्कार विधि के संस्कारकों ने आशीर्वाद मंत्र का वाचन करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया की उपस्थिति रही।

सांताक्रुज

तेरापंथी सभा एवं तेयुप की शपथ विधि जैन संस्कार विधि एवं समर्पण बोध कार्यशाला पद परिचय पालन, साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में संपन्न हुई। विजय गीत का संगान तेयुप सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सुरेंद्र कोठारी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी ने की। विशेष अतिथि नवरत्न गन्ना सुरेंद्र कोठारी, नरेंद्र तातेड़ की उपस्थिति रही।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजेंद्र नौलखा, मंत्री महेश कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष मनीष बाफना, मंत्री नीलेश कोठारी एवं संपूर्ण कार्यकारिणी को शपथ दिलाई गई।

साध्वी मलयविभा जी ने कहा कि गुरु धर्म सभा-संस्थाओं के प्रति समर्पण भाव विकसित होता रहे। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि दोनों टीमों में समर्पण, दायित्व बोध, जागरूकता, श्रमशीलता, आत्मविश्वास व लगन निष्ठा से दायित्व का निर्वहन करें।

जैन संस्कारक सौरभ दुधेड़िया, मुकेश मादरेचा, किरण परमार, पवन बाफना, दिलीप कोठारी का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन एवं संचालन मंत्री नीलेश कोठारी ने किया।

बालोतरा

सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान में साध्वी सत्यप्रभाजी, साध्वी कमलप्रभाजी, साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा को निवर्तमान अध्यक्ष नेमीचंद चोपड़ा ने शपथ दिलाई और नव निर्वाचित अध्यक्ष डूंगरचंद ने अपनी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ दिलाई।

अध्यक्ष डूंगरचंद ने स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान ने मुझ पर विश्वास कर जो दायित्व दिया मैं गुरुदेव की इंगित व धर्मसंघ के निर्देशन अनुसार सबके साथ मिलकर हर कार्य करने का प्रयास करूँगा।

कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, प्रभारी गौतम सालेचा व जसराज बुरड़ ने अपने विचार रखे। कार्यकारिणी सदस्य धनराज ओस्तवाल, बाहुबली भंसाली व सभी क्षेत्र के सभा, तेयुप, महिला मंडल अध्यक्ष व पदाधिकारी और गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। संस्थान की ओर से सभी क्षेत्रों के अध्यक्ष का सम्मान किया गया। संचालन ललित श्रीश्रीमाल ने किया।

बीड, महाराष्ट्र

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा एवं तेयुप ने शपथ ग्रहण की। साध्वीश्री जी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष लेमकरण समदड़िया एवं परिषद अध्यक्ष राहुल समदड़िया के प्रति मंगलकामना करते हुए बीड क्षेत्र की यशस्वीता बढ़ाने एवं धर्मसंघ की गरिमा में चार चाँद लगाने की विचारधारा व्यक्त की एवं निवर्तमान टीम को साधुवाद प्रदान किया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि संघ हमारा भारी उपकारी है। इसके उपकार को चुकाने के लिए तीन चीज अपेक्षित हैं –सूझबूझ, परिश्रमशीलता एवं उदारता। हर परिस्थिति में मेरूसी अडोलता, त्याग व बलिदान की भावना सभा-संस्था को प्राणवान बनाएगी। साध्वीश्री जी ने युवकों को अपने त्रिआयामी कार्यों में जागरूकता रखने की प्रेरणा दी।

निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष रोहित ने राहुल को एवं राहुल ने अपनी ओम को शपथ ग्रहण करवाई। उपासक सुभाष ने लेमकरन को एवं अध्यक्ष ने अपनी टीम को शपथ ग्रहण करवाई। श्रावक निष्ठा पत्रों का वाचन राहुल समदड़िया ने किया तथा शांतिलाल समदड़िया ने जागरण गीत का संगान किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में सिंघवी भवन में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी संवेगप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु धर्म रथ के सारथी थे।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि तेरापंथ की आधारशिला है मेवाड़ की पथरीली भूमि, चंद्रप्रभु का मंदिर यक्ष का आयतन भयावह स्थान, न हवा, न प्रकाश, केलवा की अंधेरी ओरी किंतु आचार्य भिक्षु के भीतर प्रकाश के दीप जल उठे और उन्होंने शुभ मुहूर्त में शुभ क्षणों में भगवान महावीर को संबोधित कर कहा–हे प्रभो यह तेरा पंथ।

कार्यक्रम में सभा, तेयुप, महिला मंडल एवं स्थानकवासी समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम सफल रहा।

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

✦ *जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संतों का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

गंगाशहर।

मुनि जितेंद्र कुमार जी का तेरापंथ भवन, गंगाशहर में चातुर्मास हेतु जुलूस के साथ मंगल प्रवेश हुआ। आचार्यश्री तुलसी समाधि स्थल नैतिकता का शक्तिपीठ पर कुछ क्षण ध्यान करने के पश्चात मुनियों ने मंगल प्रस्थान किया। विशाल जुलूस में सभी संघीय संस्थाओं के सदस्य गणवेश में जयघोषों से स्वागत करते रहे। नैतिकता के शक्तिपीठ से हरिराम चौक, अणुव्रत मार्ग, करणानी मोहल्ला, चोरड़िया चौक, जैन मंदिर होते हुए जुलूस तेरापंथ भवन पहुँचा।

इस अवसर पर यहाँ विराजित मुनि शांतिकुमार जी आदि संतों ने अगवानी कर स्वागत किया। मुनि शांतिकुमार जी ने कहा कि गुरुदेव ने हमारी भावना रखकर श्रावकों के निवेदन पर यहाँ गुरुकुलवास से संतों को भेजा है। गंगाशहरवासी सक्रियता के साथ चातुर्मास के कार्यक्रमों में भाग लें।

मुनि जिनेंद्र कुमार जी ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्यश्री ने यहाँ चार संतों के साथ चातुर्मास करने भेजा है। २५ वर्षों में यह मेरा प्रथम चातुर्मास है जो गुरुदेव से अलग है। मुझे पूरा विश्वास है कि गुरुदेव के आशीर्वाद से यहाँ के श्रावक समाज में नई जागृति आएगी और यह चातुर्मास एक सफलतम चातुर्मास होगा।

मुख्य अतिथि बिहारीलाल विश्नोई, विधायक-नोखा ने कहा कि आजमुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि मुनि जितेंद्र कुमार जी की नोखा जन्मभूमि है उसी क्षेत्र से मैं जुड़ा हुआ हूँ। चातुर्मास में आचार्यश्री के संदेशों को मुनिश्री जन-जन तक पहुँचाएँगे। मैं सभी संतों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त नीरज के० पवन ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कन्या मंडल ने किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान अध्यक्ष महावीर रांका, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लुणकरण छाजेड़, तेयुप उपाध्यक्ष महावीर फलोदिया, महिला मंडल अध्यक्षा ममता रांका, अणुव्रत समिति मंत्री भंवरलाल सेठिया, किशोर मंडल संयोजक दीपेश बैद ने स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री रतन छलाणी ने किया।

जीवन-विज्ञान सर्वांगीण विकास का हेतु

कोयंबटूर।

वेपपड़ै स्थित श्री वल्लीअप्पा विद्यालय एवं ईरोड स्थित एईटी मैट्रिकुलेशन स्कूल में आयोजित कार्यशाला में साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि जीवन-विज्ञान के प्रयोगों द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सकता है। साध्वी धैर्यप्रभाजी ने सरल-सहज भाषा में तमिल में अनुवाद करके समझाया। साथ ही छात्रों को प्रायोगिक प्रयोग जिसमें महाप्रयाण ध्वनि, श्वासप्रेक्षा, संकल्प शक्ति बढ़ाने हेतु अनेकों प्रयोग करवाए गए।

इस अवसर पर साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने बच्चों को नशामुक्ति का संकल्प भी करवाया। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी, साध्वी प्रबोधयशा जी, साध्वी सन्मतिप्रभाजी का विशेष सहयोग रहा। एईटी स्कूल जहाँ पिछले १२ वर्षों से जीवन-विज्ञान पाठ्यक्रम के रूप में चल रहा है वहाँ के प्रिंसिपल गोविंदराज ने कोरोना के बाद पुनः इसको शुरू करने की इच्छा जाहिर की।

कार्यक्रम के आयोजन में जीवन विज्ञान टीम के वरिष्ठ सदस्य भंवरलाल भूतोड़िया, कार्यकर्ता राजेश बोथरा, हेमंत दुगड़ का सराहनीय प्रयास रहा। इस अवसर पर महिला मंडल संरक्षिका गिन्नी देवी बाबेल, महिला मंडल की भूतपूर्व अध्यक्षा वीना देवी भूतोड़िया की उपस्थिति रही।

वृक्षारोपण व सेवा कार्य

रायगढ़।

अणुव्रत समिति, मुंबई के अंतर्गत उपसमिति रायगढ़ द्वारा जिला परिषद की एक स्कूल के प्रांगण में ४५ वृक्षारोपण किया साथ ही अणुव्रत बुक बैंक प्रोजेक्ट के अंतर्गत बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु अणुव्रत विद्यार्थी एवं शिक्षक नियम के स्टिकर लगाकर २ कम्प्यूटर वितरित किए। विभाग प्रभारी सीमा बाबेल ने उपस्थित सभी बच्चों और शिक्षकों को अणुव्रत की जानकारी दी और विद्यार्थी और शिक्षक नियम पढ़कर अपने भीतर उतारकर पालन करने का प्रयास करने के लिए कहा।

अणुव्रत के ग्यारह नियम और अणुव्रत के कार्यों की स्कूल के प्रबंधन और टीचर्स ने अणुव्रत समिति की प्रशंसा की और रोपे गए वृक्ष की देख-रेख करने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में विभाग प्रभारी सीमा बाबेल, जितेंद्र बाबेल, आशीष मेहता, पंकज सोनी, कृष्णा जैन, दर्पण जैन, समृद्धि जैन के साथ रोटरी क्लब ऑफ पनवेल एली के प्रेसिडेंट स्वाति लिखिते, सेक्रेटरी आदित्य जोशी व पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 - 31 जुलाई, 2022

✦ *मुख को साफ रखना चाहिए। उसके लिए कुल्ला ही नहीं, वाक्संयम और खाद्यसंयम भी आवश्यक है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ के १०३वें जन्म दिवस समारोह के आयोजन

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद एवं टीपीएफ के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस का कार्यक्रम प्रज्ञा दिवस के रूप में कवाडीगुड़ा स्थित हेबिटेट एलाइट परिषर में आयोजित किया गया। टीपीएफ के तत्त्वावधान में attain your inner peace कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ टीपीएफ सदस्यों के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद एवं टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने आगंतुकों का स्वागत किया। महासभा की ओर से ललित बैद, महिला मंडल की अध्यक्ष अनीता गिरिया ने भी अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी रश्मिप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से अपने अर्ध्यांजली अर्पित की। तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ के राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़ ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि टीपीएफ ने समसामायिक विषय का चयन किया है। आज के इंसान को सबसे ज्यादा किसी चीज की आवश्यकता है तो वह है शांति की। साध्वी कल्पयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। आभार ज्ञापन टीपीएफ के पंकज संचेती ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ : प्रज्ञा दिवस

नालासोपारा (मुंबई।)।

इंद्रपस्थ के प्रांगण में मनोहर गुंदेचा के निवास स्थान पर साध्वी प्रज्ञाश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। कन्या मंडल ने गीतिका का संगान किया। तत्पश्चात तेयुप मंत्री द्वारा विरार, वसई एवं आसपास से पधारे सभी अतिथियों का स्वागत किया। विरार के सभा अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

साध्वी विनयप्रभाजी ने कहा कि बचपन से ही कोई महान नहीं होता। व्यक्ति अपने कर्मों से, अपने गुणों से महान होता है। उनमें से आचार्य महाप्रज्ञ भी एक नाम है। साध्वीश्री जी ने अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला एवं कविता के माध्यम से विचार व्यक्त किए।

तत्पश्चात साध्वी प्रतीकप्रभाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस के अवसर पर कहा कि इस युग के श्रेष्ठ दिव्य पुरुष के जीवन रूपी सागर से संभूत अमृत के समान महाप्रज्ञ जी ने सभी मानवों का अहिंसा के अमृत का पीयूष पान कराया। साध्वी सरलप्रभाजी ने कहा कि अध्यात्म जगत के हिमालय प्रज्ञा के महान-संग्रहालय, महान मनस्वी, प्रखर ध्यान तपस्वी, समर्पित, प्रबतबद्ध गुरु भक्ति थी, वर्चस्वी दृष्टिकोण था।

साध्वीप्रज्ञाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी घंटों-घंटों ध्यान में खड़े रहते, अध्यात्म व विज्ञान का मेल समझाया। इस अवसर पर वसई, विरार एवं आसपास के क्षेत्र से अच्छी उपस्थिति रही।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, कोषाध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, मंत्री दिनेश धाकड़, कोषाध्यक्ष मनोज सोलंकी एवं पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री अभातेयुप जैन संस्कारक पारस बाफना ने किया।

एक शाम महाप्रज्ञ के नाम

चेन्नई।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस के अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित रात्रिकालीन कार्यक्रम में एक शाम महाप्रज्ञ के नाम के अंतर्गत बाल संघ गायकों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

१७ बच्चों द्वारा प्रस्तुतियाँ की गई। भक्ति संध्या का यह अनूठा कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन विधि मांडोत एवं इक्षु मूथा ने किया।

बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए टंडियारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी इंदरचंद डूंगरवाल ने सभी बच्चों का सम्मान किया। इस अवसर पर साहूकारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़, तेरापंथ सभा सहमंत्री देवीलाल हिरण, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण आदि महानुभावों की विशेष उपस्थिति रही।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की जन्म जयंती समारोह

पर्वत पाटिया।

तेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म जयंती पर तेरापंथ भवन, पर्वत पाटिया में 'ॐ श्रीं महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' जाप का कार्यक्रम रखा। जिसमें तेरापंथी सभा के गणमान्य सदस्य, तेयुप के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण और तेरापंथ किशोर मंडल की उपस्थिति रही। सभी ने सामायिक के साथ जाप कर आचार्य महाप्रज्ञ जी के श्रीचरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री विनय जैन ने किया।

सिद्धयोगी थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

सैंतला, ओड़िशा।

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी की प्रेरणा से आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस सामायिक, जप, गीत एवं वक्तव्य के द्वारा सैंतला तेरापंथ भवन में मनाया गया। सभा अध्यक्ष उदयचुद जैन ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी सिद्ध योगी पुरुष थे। उनका जीवन उच्च कोटि का पवित्र एवं पावन था। महात्मा महाप्रज्ञजी के साहित्य एवं प्रवचन ने जनमानस की विचारधारा को बदला।

महिला मंडल की बहनों ने सामुहिक रूप से महात्मा महाप्रज्ञ के जीवन-दर्शन से संबंधित गीत का संगान कर वातावरण को महाप्रज्ञमय बना दिया। सचिन जैन ने बताया कि नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महाप्रज्ञ जप एवं लोगस्स का सामुहिक संगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

सरल और सहज थे आचार्य महाप्रज्ञ जी

आमेट।

तुलसी विहार में विराजित साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का १०३वाँ जन्म दिवस मनाया गया। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महाप्रज्ञ का जीवन बहुत ही सरल एवं सहज एवं आकर्षक था। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ एक अनोखी जोड़ी थी। साध्वीवृंद द्वारा गीतिका की प्रस्तुति हुई।

साध्वी पावनप्रभा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन-दर्शन पर उद्बोधन व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, गणपत लाल डांगी, नरेंद्र श्रीश्रीमाल, मिश्रीलाल चौधरी, दलीचंद कच्छारा, पारस पामेचा, मूलचंद बोलिया, सुंदरलाल हिरण सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

✦ *हर स्थिति अनुकूल बन जाए, यह संभव नहीं। इसलिए तुम परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना सीख लो, फिर वे तुम्हें बाधिक नहीं करेगी।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

योग दिवस के विविध आयोजन

चेन्नई

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा योगाभ्यास का एक सत्र आयोजित हुआ।

चेन्नई उपनगर स्थित तमिलनाडु स्पेशल पुलिस प्रशिक्षण रेजिमेंटल केंद्र, आवडी क्षेत्र में आयोजित इस योगाभ्यास कार्यक्रम का संचालन योग प्रशिक्षक सेजल जैन ने किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया ने अणुव्रत समिति, चेन्नई के इतिहास और समिति की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी एवं आयोजन की आयोजना के लिए पुलिस ट्रेनिंग सेंटर का आभार व्यक्त किया।

डेप्युटी कमांडेंट सेंथिल ने अणुव्रत समिति टीम का स्वागत किया। सबइंस्पेक्टर शर्मिला ने अणुव्रत समिति की इस पहल पर धन्यवाद ज्ञापित किया। अणुव्रत समिति, चेन्नई के निवेदन पर आईपीएस ऑफिसर विजयलक्ष्मी ने इस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई। १४२ कैडेट्स और ६ ऑफिसर की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम सफल रहा।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति, चेन्नई के अध्यक्ष ललित आंचलिया, मंत्री अरिहंत बोथरा, समिति सदस्य एवं पूर्व मंत्री जितेंद्र समदड़िया भी उपस्थित थे।

जयपुर

अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा जयपुर पब्लिक स्कूल में अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा की अध्यक्षता में योग दिवस मनाया गया। जैन विश्व भारती से प्रशिक्षित योगा शिक्षक कृष्ण कुमार गुप्ता ने सभी शिक्षकों को विभिन्न यौगिक क्रियाएँ एवं आसन-प्राणायाम करवाए तथा अंत मे रचना साहनी ने योग की जीवन में उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

बृजलता भनोत ने शिक्षकों व विद्यार्थियों के जीवन में योग की प्रासंगिकता को विस्तार से समझाया। धन्यवाद ज्ञापन संस्था के परामर्शक एवं काउंसिलर जी०एस० विजय ने किया।

भीलवाड़ा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति द्वारा जीवन विज्ञान एवं योग कार्यशाला का आयोजन महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल शास्त्रीनगर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जीवन विज्ञान गीत का संगान पुष्पा पामेचा द्वारा हुआ।

योग प्रशिक्षिका अनिता हिरण ने बच्चों से अलग-अलग मुद्रा बनवाए, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। कार्यक्रम के दौरान समिति अध्यक्ष आनंद बाला एवं तेरापंथी सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने सभी का स्वागत किया। जीवन विज्ञान संयोजक उषा सिसोदिया ने जीवन विज्ञान के बारे में बताया। विद्यालय की प्रिंसिपल दीपा पेशवानी का समिति की तरफ से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राजेश चोरड़िया एवं जीवन विज्ञान विभाग सह-संयोजक स्वीटी नेनावटी ने आभार व्यक्त किया।

मंगल भावना कार्यक्रम

मैसूर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के एक माह के प्रवास की संपन्नता पर मंगल भावना का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि यह चंदन की नगरी मैसूर बड़ा ही साताकारी क्षेत्र है। यहाँ का श्रावक समाज बड़ा ही अनुकूल है। श्रद्धा भावना, देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था कूट-कूटकर भरी हुई है। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने दायित्व के प्रति जागरूक है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि मंगलभावना ग्रहणशीलता, प्रमोदभावना का सूचक है। जिसमें उदारता रहती है वही दूसरों के प्रति मंगलभावना प्रेषित कर सकता हैं साध्वी मेरुप्रभाजी व साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। समाज के पदाधिकारी एवं सभी श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी मंगलभावना साध्वीश्री जी के प्रति प्रेषित की व आगामी विहार एवं चातुर्मास की आध्यात्मिक सफलता की मंगलकामना की।

तेरापंथ स्थापना दिवस के विविध आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में स्थापना दिवस आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु के केलवा की अंधेरी ओरी में शनिवार की सायं तेले की तप अनुष्ठान के साथ तेरापंथ की पुण्य स्थापना की। १३ संतों की संख्या साथ में थी जो आज ७०० की संख्या में है। १३ श्रावकों की संख्या आज लाखों में है। यह उनके तपोमय आभावलय का प्रभाव है।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभाजी ने उनके यशस्वी कर्तृत्व और तेजस्वी नेतृत्व के संदर्भ में अवगति दी। साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने इस वसुंधरा को धन्यातिधन्या बताया, जहाँ भिक्षु जैसे रत्न पैदा हुए। साध्वी चिंतनप्रभाजी ने कहा कि उनका ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार प्रकृष्टता लिए हुए था।

इसी क्रम में ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक अशोक बैद, शाहदरा सभा के पूर्व अध्यक्ष भानुप्रकाश बरड़िया, गांधीनगर सभा के अध्यक्ष कमल गांधी, तेममं दिल्ली सहमंत्री सरला बैद ने महामना भिक्षु के चरणों में भावों से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन शाहदरा, सभा के पूर्व मंत्री सुरेश भंसाली ने किया।

रात्रिकालीन धम्म जागरण का कार्यक्रम शासनश्री साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। भानुप्रकाश बरड़िया, वेदिक चोरड़िया, अशोक बैद, हलचल जैन, राजीव महनोत, सुनीता बैंगाणी, पुलकित खटेड़, सुरभि बैंगाणी, शांति देवी नाहटा, पवन बरड़िया ने अपनी गीतिका, रचनाओं द्वारा आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना में अपने स्वर दिए।

कार्यक्रम का संचालन हनुमान नाहटा ने किया। सभी संघ गायकों का दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, मंत्री आनंद बुच्चा, संगठन मंत्री देवेंद्र पुगलिया, कोषाध्यक्ष संपत नाहटा आदि ने पंचरंगा पट्टा पहनाकर स्वागत किया गया।

जोधपुर

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। मंगलाचरण साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने भिक्षु अष्टकम् से किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आज गुरु पूर्णिमा का दिन है, गुरु का स्थान भगवान से ऊपर बताया गया है, भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है, गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है। वे पथदर्शक होते हैं, अज्ञ तिमिर को नष्ट करके जन-जन को आलोकित करते हैं।

आज के दिन तेरापंथ धर्मसंघ को विलक्षण गुरु मिला था। उनका नाम था—आचार्य भिक्षु स्वामी, आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन तेरापंथ की स्थापना हुई। तेरापंथ का अर्थ है—हे प्रभो! यह तेरा पंथ। अहंकार एवं ममकार का विसर्जन का नाम है—तेरापंथ।

साध्वी सुलभयशाजी, साध्वी संबोधयशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने सामुहिक रूप से सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी कंचनरेखा जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन पर प्रकाश डाला। सभा के मंत्री दिलीप मालू ने भावभरा गीत प्रस्तुत किया तथा तेयुप के द्वारा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुमंगलाश्री जी ने किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष मितेश जैन एवं उनकी टीम ने मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला के बैनर का विमोचन किया।

रात्रि में धम्म जागरण का आयोजन भिक्षु संगीतमय कार्यक्रम से हुआ। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

केलवा

साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में २६३वाँ स्थापना दिवस भिक्षु नगरी केलवा में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम लगभग चार चरणों में चला—सर्वप्रथम पहले चरण में प्रातःकाल में अंधेरी ओरी में साध्वी पावनप्रभा जी और समणी कुसुमप्रज्ञा जी के सान्निध्य में ओम भिक्षु के जप घंटे में लगभग तीन लाख बार जाप अनुष्ठान संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का दूसरा चरण साध्वीश्री जी के सान्निध्य में भिक्षु अभिवंदना का कार्यक्रम भिक्षु स्मृति स्थल तेरापंथ सभा भवन में रखा गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आज गुरुपूर्णिमा है आज के दिन ही संत भीखण जी ने भाव दीक्षा स्वीकार की थी। शुद्ध संयम आराधना का संकल्प किया था। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी आत्मयशा जी, साध्वी अजययशा जी के भिक्षु अष्टकम् स्त्रोत उच्चारण से हुआ। लगभग २२ श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का तीसरा चरण भिक्षु भूमि से एक रैली निकाली गई, इस रैली में तेरापंथ सभा, केलवा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला और आचार्य भिक्षु मित्र मंडल (मुंबई) के सभी सदस्य अपने गणवेश में उपस्थित थे। रैली मुख्य बाजार से होते हुए भिक्षु विहार पहुँची।

कार्यक्रम का चौथा चरण विशाल धम्म जागरण का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा सहमंत्री अमित कुमार चंडालिया, पूर्व न्यायाधीश बसंतीलाल बाबेल, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हरि सिंह राठौड़, स्थानीय सभा के अध्यक्ष सुभाष कोठारी थे।

कार्यक्रम के मुख्य गायक कलाकार ऋषि दुगड़, अभिलाषा बांठिया, पीपाड़ा सिस्टर्स एवं झील और जागृत कोठारी ने सुमधुर संगीत से पूरे वातावरण को भिक्षुमय बना दिया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुभाष कोठारी ने आगंतुकों का स्वागत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल, केलवा के द्वारा गीतिका से किया गया। कार्यक्रम में ही सभा का शपथ ग्रहण समारोह भी रखा गया। जिसमें पूर्व अध्यक्ष महेंद्र कोठारी ने शपथ ग्रहण करवाई। तत्पश्चात कार्यक्रम के मध्य सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों और कलाकारों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का आभार ज्ञापन मुकेश कोठारी द्वारा किया गया और संचालन दिनेश कोठारी तथा लक्की कोठारी ने किया।

लुधियाना

साध्वी प्रतिभाश्री जी के सान्निध्य में २६३वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वी प्रतिभाश्री जी ने कहा कि आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की स्थापना आषाढ़ी पूनम की संध्या को की थी भाव दीक्षा स्वीकार करके। तेरापंथ का उद्भव कोई सहसा घटित घटना नहीं, वह उस समय की आवश्यक अनिवार्य माँग थी। क्रांतदृष्टा आचार्य भिक्षु ने एक धर्मक्रांति की उनका एकमात्र उद्देश्य था—सम्यग् आचार और सम्यग् विचारों की स्थापना। तेरापंथ के उद्भव में जहाँ उस समय की विषम धार्मिक स्थितियाँ निमित्त बना तो साथ में आकाशीय ग्रहस्थिति भी निमित्त बनी।

तेरापंथ सभा, लुधियाना के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अभय कुमार ने कहा कि आचार्य भिक्षु विलक्षण बुद्धि के धनी, अजेय आत्मबली, अटूट संकल्प बली, अटल आस्था के धनी थे। महिला मंडल की अध्यक्षा इंदु सेठिया ने विचार रखे। विनोद देवी स्नेहा जया-संजीव बरड़िया ने गीत के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा अर्पित की। मंच का संचालन नवनिर्वाचित मंत्री सुशील ने किया। साध्वी विकासप्रभा जी, साध्वी नीतिप्रभा जी, साध्वी पुलकितप्रभाजी ने अपने विचारों के द्वारा श्रद्धा समर्पित की।

समर्पण के श्लाका पुरुष थे आचार्य महाप्रज्ञ

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में बघेरवाल बिल्डिंग राजीव गांधी नगर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन झरने की तरह निर्मल, पवित्र, गतिशील एवं उपयोगिता लिए हुए था, उनके हृदय में बालक जैसी सरलता थी। वे समर्पण के शलाका पुरुष थे।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जिनशासन के चमकते हुए सितारे थे। विनम्रता, सहजता, सरलता, समता के पर्याय थे। साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा कि ज्ञान की गंगोत्री, साधना की सरस्वती, लोक कल्याण के त्रिवेणी संगम का नाम ही आचार्य महाप्रज्ञ दर्शन जगत के बोधन्य विद्वान थे। साध्वी समत्वयशा जी ने सुरीले कंठ से स्वर लहरी प्रस्तुत की।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा कि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, योगी, मोनी, जपी, स्वाध्याय पुरुष थे। मुख्य अतिथि गुवाहाटी से समागत दिलीप दुगड़ ने कहा कि प्रज्ञा के महासूर्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने धर्मसंघ में नए आलेख लिखे।

सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, सभा मंत्री धर्मचंद जैन, तेयुप मंत्री कमलेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष, उषा बाफना, वर्षा जैन, डॉ० चेतना जैन, टीपीएफ अध्यक्ष अखिलेश कांठेड़, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र बरड़िया ने भावाभिव्यक्ति दी। तेयुप ने मंगल गीत का संगान किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

चिल्ड्रन पीस पैलेस एवं बालोदय का भ्रमण कार्यक्रम

भीलवाड़ा।

बच्चों में नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण का संवर्धन हो ऐसा उद्देश्य है अणुव्रत समिति का। इसी उद्देश्य के अंतर्गत अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा ने तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला के बच्चों को राजसमंद स्थित चिल्ड्रन पीस पैलेस एवं बालोदय के भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित किया। बालोदय एजु टूर संयोजक अभिषेक ने बताया कि बच्चों को योग, लघु चल चित्र द्वारा संस्कार निर्माण, मिनी पार्लियामेंट द्वारा लोकतंत्र की जानकारी एवं विभिन्न दीर्घाओं द्वारा बच्चों में जिज्ञासा जागृत करना एवं खेल-खेल में नैतिक शिक्षा प्रदान की गई।

ज्ञानशाला संयोजिका एवं समिति सहमंत्री ने बताया कि इस तरह की आध्यात्मिक पिकनिक से बच्चों का दोहरा विकास होता है। अणुविभा उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया। अणुविभा के प्रशिक्षक प्रकाश तातेड़, शब्बीर शुक्रिया, देवेंद्र आचार्य एवं सीमा कावड़िया ने सत्रों को संपादित किया। अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा की अध्यक्षा आनंद बाला, मंत्री राजेश चोरड़िया, सहमंत्री पुनीत बोहरा एवं संगठन मंत्री विनीता सुतरिया ने व्यवस्थाएँ संभाली।

ज्ञानशाला सह-संयोजिका संगीता चोरड़िया, मुख्य प्रशिक्षिका गरिमा कोठारी, शोभना सिरोहिया, पिंकी आच्छा आदि प्रशिक्षिका उपस्थित थी। ४२ बच्चों ने भाग लिया।

मंत्र दीक्षा का आयोजन

देशनोक।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भक्तामर स्तोत्र का सामुहिक उपक्रम रखा गया। तत्पश्चात मुनि आकाश कुमार जी ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि बच्चे देश की शान होते हैं, देश के भविष्य होते हैं, अगर बच्चों को अभी से अच्छे संस्कार दिए जाएँ तो बच्चों का जीवन अच्छा बन सकता है। गीत के माध्यम से बच्चों को गलत आदतों से बचने की प्रेरणा दी गई। मंत्र दीक्षा के उपक्रम में सभी उपस्थित ज्ञानार्थियों ने मुनिश्री से संकल्प ग्रहण किए।

नथमल नाहटा, देशनोक के परिवार की ओर से उपस्थित ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को पुस्तक व पेन वितरण किया गया। रात्रि में भीलवाड़ा से आए संगीतकार संजय भाणावत एवं उनकी धर्मपत्नी वनीता भाणावत द्वारा गीतों की प्रस्तुति दी गई। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष जीतमल बांठिया ने अतिथियों का स्वागत किया एवं सम्मानित किया।

✦ *निराश बनने में जल्दी मत करो। ध्यान दो, कोई उपाय है क्या? हो सकता है कि तुम्हें कोई मार्ग मिल जाए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

कैंप का आयोजन

विजयनगर।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस के अवसर पर तेयुप, विजयनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर आरपीसी लेआउट, मागड़ी रोड एवं कामाक्षी पाल्या में १६ तरह की रक्त जाँच मात्र १०३/- में करने हेतु साप्ताहिक कैंप का आयोजन किया गया।

कैंप के प्रथम दिवस में कुल ६२ लोग लाभान्वित हुए। इस अवसर पर परिषद की ओर से अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री राकेश पोखरणा, सहमंत्री संजय भटेवरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

पब्लिक स्पीकिंग कार्यक्रम

अमराईवाड़ी।

तेयुप द्वारा पब्लिक स्पीकिंग का कार्यक्रम संत भवन, अमराईवाड़ी में रखा गया। इस कार्यक्रम में प्रोफेशनल ट्रेनर के रूप में आकाश शाह और सुरभि शाह को बुलाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। पधारे हुए ट्रेनर का परिचय मीडिया प्रभारी मुकेश सिंघवी ने सभी को दिया। स्वागत वक्तव्य तेयुप के अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने किया।

सुरभि शाह और आकाश शाह ने कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए बताया कि अपने आपको कैसे निखारें, अपने अंदर छुपे हुए टेलेंट को किस तरह बाहर लाएँ, मंच पर बोलने से पूर्व किस तरह की तैयारी करें, ऐसी बहुत सी बातें उन्होंने बहुत ही अच्छी तरह से समझाई। स्टेज फायर को दूर करने और कॉन्फिडेंस को बिल्ड करने के लिए उन्होंने सभी को यूनिक तरह से गेम खिलाकर बताया।

कार्यक्रम में विशेष सभी ३३ पार्टिसिपेट को अपना इंट्रोडक्शन कैसे देना चाहिए, उसके बारे में जानकारी दी। सभी को स्टेज पर बुलाकर उनसे उन्हीं के द्वारा खुद का इंट्रोडक्शन करवाकर उनके स्टेज के डर को दूर करने का प्रयास किया गया।

संघ के प्रहरी-हो आस्था गहरी कार्यक्रम का आयोजन

तिरुपुर।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा 'संघ के प्रहरी हो आस्था गहरी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी द्वारा ध्यान के अभ्यास कराने के साथ हुई। ऋषभ आंचलिया ने गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी धैर्यप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी प्रबोधयशा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी सन्मतिप्रभाजी एवं साध्वी अनुप्रेक्षाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन सुमति भंडारी ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

डॉ० मरोठी की देख-रेख में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी में किया गया। कुल ११ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज मरोठी जैसे चिकित्सक जुड़े हुए हैं।

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया। तेयुप मंत्री व एटीडीसी के पूर्व सह-संयोजक हेमंत बैद ने शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई।

जैन विद्या के सर्टिफिकेट वितरण समारोह

नालासोपारा (मुंबई)।

तेरापंथ भवन के प्रांगण में साध्वीप्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय (जैन विद्या) के ज्ञानार्थियों के ५१ सर्टिफिकेट केंद्रीय व्यवस्थापक (उपासिका) बहन प्रेमा धाकड़ ने सभा, तेयुप आदि पदाधिकारियों के साथ वितरण किए, इस अवसर पर भवन में विराजित साध्वीश्री जी ने उपस्थित सदन को प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्राा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के आयोजकत्व में मंत्र दीक्षा एवं वीतराग कार्यशाला का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि बालक अनुकरण प्रिय होते हैं, अभिभावक इनके जीवन निर्माण और अच्छे संस्कार देने में जागरूक रहें।

साध्वीश्री जी ने ज्ञानार्थियों के चहूमुँखी विकास के लिए प्रशिक्षिकाओं के श्रम की भी सराहना की। साध्वी शौर्यप्रभाजी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने सामुहिक संगीत, बालिका परिधि ने वक्तव्य, शहर के विभिन्न क्षेत्रों में संचालित ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों ने संगान, नाटकीय प्रस्तुति के साथ-साथ महाश्रमण त्याग बिग बाजार में आध्यात्मिक स्टॉल लगाए।

तेयुप, चेन्नई अध्यक्ष विकास कोठारी ने अभातेयुप के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं संपूर्ण परिषद का स्वागत किया। टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने ज्ञानशाला द्वारा आयोजित 'महाश्रमण त्याग बिग बाजार की संक्षिप्त जानकारी दी।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। साध्वी राजुलप्रभाजी ने संयोजकीय वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम के प्रायोजक रणजीतमल अक्षय छल्लाणी परिवार का परिषद द्वारा सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक दीपक श्रीश्रीमाल एवं कमल शामसुखा ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर सभाध्यक्ष उगमराज सांड, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया इत्यादि गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

✦ *प्रथम कोटि के कार्यकर्ता निष्काम सेवा देने वाले होते हैं। नाम, ख्याति की आकांक्षा साधना की दृष्टि से भी बाधक है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा व वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

सरदारपुरा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा एवं वीतराग कार्यशाला का आयोजन तातेड़ गेस्ट हाउस में किया गया। मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से ज्ञानशाला के प्रशिक्षिका एवं ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति द्वारा किया गया।

साध्वी भव्यप्रभाजी द्वारा अनासक्त ध्यान ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों से प्रयोग करवाए। साध्वी महकप्रभाजी ने ज्ञानार्थियों को त्रिपदी वंदना करवाई।

तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी ने स्वागत भाषण दिया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि नमस्कार मंत्र प्रभावशाली महामंत्र है। यह आध्यात्मिक विकास का आधार है। साध्वी करुणाप्रभाजी ने कहानी द्वारा नमस्कार महामंत्र का महत्त्व समझाया।

साध्वीश्री ने वीतराग पथ कार्यशाला के संदर्भ में कहा कि वीतराग वही बन सकता है जिसने मोह पर विजय प्राप्त कर ली। कार्यक्रम के प्रायोजक परिवार को पंचरंगी पहनाकर आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर उम्मेदराज सिंघवी, विनय तातेड़, भूपेश तातेड़, सतीश बाफना, बी०आर० जैन, निरंजन तातेड़, योगेश तातेड़, विकास चोपड़ा, किशोर मंडल, सरदारपुरा से ऋषभ श्यामसुखा, प्रशांत मेहता, मुदित बुरड़, तन्मय बाफना, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप सरदारपुरा मंत्री निर्मल छल्लानी ने किया।

मंत्र दीक्षा, वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, साउथ हावड़ा ने मंत्र दीक्षा संग वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन उत्तर हावड़ा में किया गया।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ६२ बच्चों ने सहभागिता दर्ज करवाई। जिसमें से १७ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी।

परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने मंत्र दीक्षा के बारे में जानकारी दी।

परिषद मंत्री गगन दीप बैद ने बताया कि वीतराग पथ कार्यशाला में प्रशिक्षिकाओं के सहयोग से ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रेरणादायी नाट्य प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के प्रायोजक, साउथ हावड़ा की सभी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं सहित संयोजक हर्ष बांठिया, गौरव जैन पारख, ऋषभ बैद का व्यवस्था के लिए आभार व्यक्त किया।

सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन आत्मा...

(पृष्ठ १२ का शेष)

पूज्यप्रवर ने कालु यशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि बालक कालू का नाम राशी के हिसाब से शोभाचंद आया था पर माता-पिता ने उनका नाम कालु ही रखा कारण इनके परिवार में काल भैरव की ज्यादा मान्यता थी सो इष्ट देव के नाम से यह नाम रख दिया गया होगा। कालूगणी बचपन में श्याम वर्ण का था तो उस हिसाब से ही उनका नाम कालू रख दिया होगा। कालू नाम का भाग्य था जो ऐसे महापुरुष के साथ जुड़ गया।

आदमी के जीवन में कभी-कभी सुख में भी दुःख आ जाता है। वि०सं० १९३४ में मूलचंद का देहावसान हो जाता है। छोगांजी पर भयंकर आपदा आ गई। छोगांजी अपने पुत्र की ओर विशेष जागरूक हो जाती है। बालक कालू भी माँ की आज्ञा का ध्यान रखते हैं। साध्वियों का संयोग मिला और माँ-बेटे में वैराग्य के भाव प्रबल हुए और मघवागणी ने दीक्षा की तिथि फरमा दी।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि पंच परमेष्ठि की आराधना का माध्यम है—नमस्कार महामंत्र! यह महासागर है। सामान्य आदमी इसकी गहराई नहीं नाप सकता। यह चौदह पूर्वों का सार है। यह मंत्राधिराज महामंत्र है। महामंत्र इसलिए है कि इसमें गुणों को नमस्कार किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साधु की संगत बन सकती है कल्याण का माध्यम : आचार्यश्री महाश्रमण

छापर, १४ जुलाई, २०२२

सरलता के आराधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जो आगम की वाणी में है, वो अर्हत् वाङ्मय में है। क्या-क्या कहा गया है, इसका वर्णन करना भी कठिन है। हमारे आगम स्वाध्याय के भी कुछ नियम हैं। तीर्थंकर जो कुछ बोलते हैं, वो ही एक तरह से आगम की सामग्री हो जाती है।

वर्तमान में तीर्थंकर नहीं है। मैंने भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु के जीवन में समानता का प्रस्तुतिकरण किया था। ग्रंथों में हमें आचार्य भिक्षु की बानिया भी प्राप्त होती हैं। आचार्य भिक्षु दृष्टांतों के माध्यम से भी समझाने का प्रयास किया करते थे। लौकिक क्या, लौकोत्तर क्या, कितनी-कितनी बातें वे दृष्टांतों से समझाया करते थे।

साधु के पास ज्ञान होता है और समझाने का तरीका होता है, साथ में त्याग-संयम है, तो साधु के द्वारा कितनों का कल्याण हो सकता है।

आज सावण कृष्णा एकम, चतुर्मास का प्रथम दिन है। सुबह का प्रवचन महत्त्वपूर्ण होता है। सुनकर आदमी बहुत कुछ जान सकता है। हमारे ग्रंथों, आगमों में कितनी जानकारियाँ हैं।

ज्ञान की बात कान में पड़े तो कान धन्य हो जाते हैं। कल्याण की बात सुनने को मिल जाती है। छापर पूज्यप्रवर कालूगणी की जन्म स्थली है। मैं आज प्रातः जहाँ जन्म हुआ था वहाँ गया भी था। वे बालावस्था में साधु बन गए, बाद में आचार्य बन गए। उनका अपना जीवन-वृत्त है। आचार्य श्रद्धा के आस्थान होते हैं। उनके जीवन से हम प्रेरणा ले सकते हैं।

हमारा चतुर्मास का मंगल कल दीक्षा समारोह से हो गया। बीच का मंगल भी दीक्षा के रूप में सितंबर माह में रखा हुआ है। सावण बदी एकम को तो आगम स्वाध्याय का निषेध है। स्वामीजी के पद्यों से हम ज्ञान, चिंतन व पाथेय प्राप्त कर सकते हैं। प्रवचन एक पाथेय-पोषण देने वाला हो सकता है। स्वाध्याय से भी पोषण प्राप्त हो सकता है।

सावण-भादवा माह में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का विशेष महत्त्व है। आगम के आधार पर व्याख्यान हो और भी आख्यान-व्याख्यान हो। साथ में त्याग-वैराग्य की बात भी हो। निर्जरा, प्रेरणा, कल्याण की दृष्टि से अच्छी बात हो सकती है।

प्रातः लगभग ९ बजे मुख्य प्रवचन शुरू हो सकेगा। १०:३० से पहले प्रवचन समाप्त नहीं होना चाहिए। और देरी हो सकती है। इस बार भगवती सूत्र जितना संभव होगा उस पर बोलने का बताने का विचार है। इसमें तत्त्व ज्ञान भरा है। उपरले व्याख्यान के रूप में कालू यशोविलास बाँचने का विचार है।

मुनि विकास कुमार जी जो वर्षों से सेवा केंद्र में सेवा दे रहे हैं, पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावना गीत से व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि वर्ष में लगभग १० दिन अस्वाध्याय के होते हैं।

भारतीय ऋषि परंपरा के महान संत थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

पुणे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में मनाया गया। खडकी में समायोजित कार्यक्रम की शुरुआत पुणे तेरापंथ महिला मंडल की मंगल स्वरों से हुई।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन पुरुषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व की यशोगाथा है। भारतीय ऋषि परंपरा के महान संत थे। युग-युग तक राहों को रोशन करने वाले अबुझ चिराग का नाम है आचार्यश्री महाप्रज्ञ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी ज्योतियशा जी ने कहा कि आलौकिक प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रवचन व्यक्तित्व के जीवन की दिशा और दशा को सुधारने में सक्षम है। साध्वी सुरभिप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया।

आज का आनंद हिंदी पत्रिका के संस्थापक आनंद अग्रवाल ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को समाज सुधारक के रूप में महान संत बताया।

तेयुप का जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ। तेरापंथ सभा पुणे के अध्यक्ष महावीर कटारिया, पिंपरी चिंचवड के प्रकाश गादिया, महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा कटारिया, पिंपरी चिंचवड की संस्थापक अध्यक्षा लता कांकरिया ने अपने विचार रखे।

तेरापंथ सभा के पूर्व मंत्री व समर्पित कार्यकर्ता संजय मरलेचा ने आभार ज्ञापन किया। महेंद्र मरलेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

गुरु कृपा से मिलती है-मुक्ति की मंजिल कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

हर व्यक्ति अपना जीवन जी रहा है, लेकिन उस जीवन को सही दिशा दिखाने वाले होते है—गुरु। गुरु जीवन के मार्गदर्शक पथ-दर्शक एवं प्रकाश स्तंभ होते हैं। गुरु के बिना जीवन का शुभारंभ नहीं होता।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि गुरु की करुणा ही मुक्तिदायक होती है। उनकी कृपा पाकर शिष्य अपने मनोरथ को सफल कर सकता है।

मुनि कृपारत्न सागर ने कहा कि साधना की सिद्धि के लिए गुरु की परम आवश्यकता होती है। वही मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले होते हैं। मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि गुरु की करुणा से मिलती है मुक्ति की मंजिल।

मुनि जयदीप कुमार जी ने कहा कि गुरु जीवन का आधार है, गुरु जीवन के कर्णधार हैं। कार्यक्रम में ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों ने प्रस्तुति दी।, मदुरै, तेममं ने रोचक झाँकी दिखाई।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल दुगड़, निधि चावत जयंती जीरावला, ईश शरण, चंद्रेश लोढ़ा, झुमरमल बाफना, प्रकाश जोगड़, अशोक जीरावला, मानकचंद मूथा, बजरंग बोरावत व मंगलचंद मूथा आदि ने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि भरत कुमार जी व नवनीत मूथा ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरदारपुरा।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी व साध्वी जिनबाला जी का पावटा स्थित मूलचंद तातेड़ के निवास पर आध्यात्मिक मिलन हुआ।

साध्वी जिनबाला जी प्रातः गोल बिल्डिंग, सरदारपुरा से विहार कर पावटा पधारे। जहाँ पूर्व में विराजित शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी आदि साध्वियों ने स्वागत समारोह का आयोजन किया। साध्वीवृंद ने स्वागत गीत का संगान किया।

तेयुप, जोधपुर अध्यक्ष मितेश जैन व मूलचंद तातेड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मनुष्य के चिंतन, स्मृति और कल्पना...

(पृष्ठ १२ का शेष)

यह लिपि जो लेखन में काम आती है। भाषा का भी अंग हो जाती है। कितनी हस्तलिखित पांडुलिपियाँ व ग्रंथ हमारे ग्रंथागार में है। भारत में कितनी जगह हस्तलिखित ग्रंथ मिल सकते हैं। लिखने में अक्षर सुंदर हो तो अच्छी बात है, उपयोगी हो सकते हैं। लिपि भी एक कला है। लिपि ज्ञान का सशक्त माध्यम है। यह भगवती का दूसरा सूत्र है, इसमें ब्राह्मी लिपि के कर्ता को नमस्कार किया गया है।

कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि छापर ग्राम में ओसवाल जाति में शाह बुद्धसिंह चोपड़ा-कोठारी का परिवार है। उनके पाँच संतानें थी। उनमें एक मूलचंद थे। उनकी पत्नी का नाम छोगांजी था। उनके कोई संतान नहीं थी। कई वर्षों बाद छोगांजी को स्वप्न में एक बच्चा दिखाई दिया वो बोला माँ आपके पास आ जाऊँ क्या? पर मेरे साथ में खतरा भी आने वाला है।

जैन विश्व भारती समण संस्कृति संकाय का त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित है। 'उवासग्ग दसाओ' आगम की पुस्तिका का विमोचन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। इसके आधार पर आगम-मंथन प्रतियोगिता होने वाली है। परम पावन ने आशीर्वचन फरमाया। मुनि कीर्तिकुमार जी ने समण संस्कृति संकाय के बारे में बताया।

समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष मालचंद बैंगाणी, मनोज लुणिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 - 31 जुलाई, 2022

✦ *जो स्वयं साधनाशील होता है और दूसरों के कल्याण का प्रयास करता है, उसका कल्याण तो निश्चित होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन आत्मा के साथ आगे जाने वाले होते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल, छापर, १८ जुलाई, २०२२

जिन शासन प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल आगम वाणी का वाचन करते हुए फरमाया कि भगवती के ३९वें सूत्र में प्रश्न किया गया है–भंते! ज्ञान होता है, वो ज्ञान इसी जन्म तक सीमित रहता है अथवा वह अगले जन्म में साथ जा सकता है अथवा दोनों जन्म में हो सकता है।

प्रश्न के उत्तर में कहा गया है कि हे गौतम! कोई ज्ञान इस जन्म तक सीमित रहता है, आगे साथ में नहीं जाता। कोई ज्ञान अगले जन्म में भी साथ जा सकता है। कोई ज्ञान वर्तमान जन्म और भावि जन्म दोनों में विद्यमान रहता है। जैसे वर्तमान में कोई डॉक्टर या वकील आदि है, वो वापस अगले जन्म में वैसा नहीं रहेगा, कठिन है। ये ज्ञान यहीं था, हो सकता है, आगे न भी रहे।

ऐसा भी हो सकता है कि उदाहरण के लिए आदमी को पिछले जन्म का ज्ञान, जाति स्मृति ज्ञान हो जाता है।

पिछला ज्ञान साथ में आया तभी जाति स्मृति ज्ञान हुआ, वरना पीछे का पीछे ही रह जाता है। जैसे मेघकुमार को प्रभु महावीर ने याद करवाया तो उसे जाति स्मृति ज्ञान हो गया था। वो पिछला ज्ञान साथ में लेकर आया था, तभी अभिव्यक्त हो गया। ज्ञान इस जन्म के बाद आगे के

भव में और आगे के और भवों में भी जा सकता है। कई बार इस जीवन में भी ज्ञान स्थूल रूप में नहीं रहता है। विस्मृत हो सकता है।

ज्ञान अपने आपमें एक पवित्र तत्त्व है। साथ में जाना नहीं जाना वह एक दार्शनिक, तात्त्विक, सैद्धांतिक बात हो जाती है। ज्ञान को जितना हो सके हमें पाने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान का क्षयोपशम जितना होता है, उस हिसाब से ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। चतुर्मास का समय है, ज्ञान के विकास का प्रयास हो। ध्यान साधना एवं तपस्या का भी विकास हो।

अगला प्रश्न किया गया है कि दर्शन है, सम्यक्त्व है, वह इस ही जन्म तक सीमित रहता है, क्या वो सम्यक्त्व दर्शन अगले जन्म में साथ जाता है, क्या दर्शन सम्यक्त्व वर्तमान और भावी दोनों जन्म में विद्यमान रहता है? उत्तर दिया गया–गौतम! हाँ ऐसा हो सकता है। क्षायिक सम्यक्त्व तो वापस जाने वाला नहीं है। जैसे राजा श्रेणिक का जीव तीनों जन्मों में सम्यक् ही रहेगा। वही बात दर्शन की है। ये भी आगे जा सकती है। ज्ञान और दर्शन है, वे आगे भी साथ में जा सकते हैं।

तीसरा प्रश्न किया गया है कि भगवन! चारित्र है, वह इस जन्म तक सीमित है आगे भी साथ में जाता है या उससे आगे भी जाता है। उत्तर दिया गया–हे गौतम! चारित्र इसी जन्म तक रह सकता है, वो आगे साथ जाता ही नहीं। साधु ने साधुपन लिया है, वह इसी जन्म तक है। कारण साधुपण का त्याग है। इस जीवन तक हमने नियम लिया है, आगे का हमने नियम लिया ही नहीं है।

जैसे कोई श्रावक विदेश जाकर दुकान किराए पर लेकर व्यापार करता है। बाद में वो अपने देश वापस जाना चाहता है, तो उसके कमाई तो साथ जाएगी पर जो दुकान किराए पर ली थी वो साथ नहीं जाएगी। वैसे ही साधु के चारित्र तो साथ नहीं जाएगा पर साधुपणे में जो संयम-निर्जरा की कमाई करेंगे, उसका जो लाभ है, वो हमारे साथ में जाएगा, इसलिए हम साधुपणा पालते हैं।

अगले जन्म में साधुपणा नए सिरे से लिया जा सकता है। चारित्र पाल सकता है। चारित्र अलग प्रकार की चीज है, ज्ञान, दर्शन अलग प्रकार की चीज है। अगला प्रश्न किया गया–भंते! तप है, वो इस जीवन तक ही रहता है या आगे भी साथ में जा सकता है। गौतम! तपस्या इस जन्म तक ही साथ रहती है, अगले जन्म में साथ नहीं जाती है। तप का फल साथ में जा सकता है।

पाँचवा प्रश्न किया गया–भंते! संयम होता है, वो इसी जन्म तक होता है या आगे भी साथ मे जाता है? उत्तर दिया गया–गौतम! संयम इस जन्म तक ही सीमित रहता है, वो आगे साथ नहीं जाता। इस तरह पाँच प्रश्न पूछे गए हैं, इनमें ज्ञान-दर्शन तो साथ में जा सकते हैं, पर चारित्र, तप और संयम है, वो साथ आगे नहीं जा सकते, इसलिए आराधना करनी है, यहाँ ही कर लो।

(शेष पृष्ठ १० पर)

मनुष्य के चिंतन, स्मृति और कल्पना का माध्यम बनती है भाषा : आचार्यश्री महाश्रमण

छापर, १६ जुलाई, २०२२

जिनवाणी के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रमुख आगम भगवती सूत्र का विवेचन करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के दूसरे सूत्र में कहा गया है–ब्राह्मी लिपि को नमस्कार।

लिपि का मतलब है–अक्षर विन्यास, अक्षर की रचना करना। अक्षर के तीन प्रकार बताए गए हैं लिपि सूत्र में। उनमें संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर और लब्ध्याक्षर–ये तीन प्रकार हैं। संज्ञाक्षर यानी पट्ट या कागज पर अक्षर की आकृति लिखना। मनुष्य के चिंतन, स्मृति और कल्पना का माध्यम बनती है भाषा।

भाषा अक्षरात्मक होती है। शब्द और अर्थ की पर्यालोचना कर मनुष्य जानता है, वह लब्ध्याक्षर है। हमें भाषा से ज्ञान होता है। जब हम कोई शब्द सुनते हैं, उसका अर्थ ग्रहण करते हैं, वह है, लब्ध्याक्षर। जो आदमी उच्चारण करता है, वह व्यंजनाक्षर है।

अब ये प्रश्न है कि ब्राह्मी लिपि को नमस्कार क्यों किया गया है? जैन साहित्य के प्राग्ऐतिहासिक के अनुसार ब्राह्मी लिपि का संबंध भगवान ऋषभ के साथ जुड़ता है। बताया गया है कि भगवान ऋषभ ने दायें हाथ से ब्राह्मी को १८ लिपियों का ज्ञान कराया था, सुंदरी को बाएँ हाथ से गणित विद्या सिखाई थी। इसलिए उस लिपि का नाम ब्राह्मी के नाम से ब्राह्मी लिपि पड़ गया।

ब्राह्मी प्राचीनतम प्रथम लिपि है। इसके आधार पर अन्य लिपियों का उद्भव हो गया होगा। जैन साहित्य में बताया गया है कि भाषा आर्य कौन होता है? जो अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा बोलते हैं, जिनकी लिपि ब्राह्मी होती है, वह भाषा आर्य होते हैं। हमारे जैन आचार्यों ने प्राकृत भाषा व ब्राह्मी लिपि का उपयोग किया है।

ब्राह्मी लिपि को प्रारंभ में नमस्कार इसलिए किया गया है कि ये जितने भी शास्त्र हैं, ग्रंथ हैं, हमें इनसे ज्ञान मिल रहा है। ये लिखे हुए हैं, तब ज्ञान मिल रहा है। हमारे ज्ञान के सशक्त माध्यम लिपि है। लिपि का इतना उपकार है, हमारे पर। हम दूसरों को ज्ञान देते हैं, तो लिपि हमारे काम आती है। लिपि ज्ञान देने वाली है, तो उसका सम्मान भी करना चाहिए। इसलिए लिपि को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न हो सकता है, लिपि तो निर्जीव है, उसको नमस्कार कैसे किया जा सकता है। साधु अचेतन को कैसे नमस्कार किया जा सकता है। यह प्रश्न श्रीमद् जयाचार्य ने उठाया था। लिपि के दो प्रकार हो जाते हैं–द्रव्य लिपि और भाव लिपि। द्रव्यलिपि तो अक्षरात्मक-आकृतितात्मक होती है। भाव लिपि अक्षर ज्ञानात्मक होती है। जयाचार्य ने नय के हिसाब से बताया है कि ब्राह्मी लिपि के कर्ता कौन है? और सिखाने वाले कौन हैं? प्रणेता-कर्ता भगवान ऋषभ है। यहाँ लिपि के कर्ता को नमस्कार किया गया है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**